रामायण

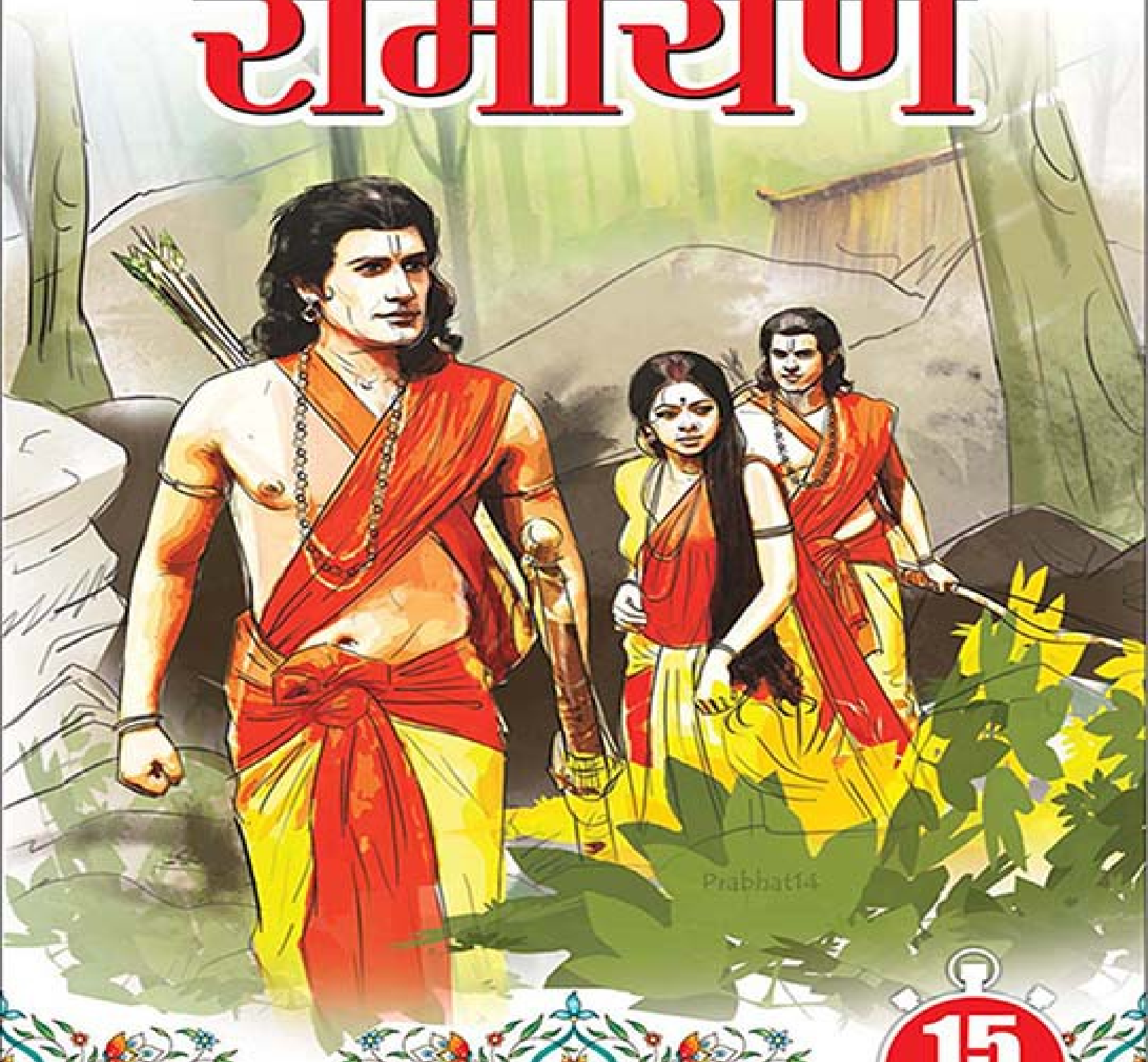

15 MINUTE READ

रामायण

eISBN: 978-93-8980-757-8
© लेखकाधीन
प्रकाशक डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली- 110020
फोन : 011-40712200
ई-मेल : ebooks@dpb.in
वेबसाइट : www.diamondbook.in
संस्करण : 2020

Ramayana

By - *Himanshu Sharma*

विषय सूची

1. रामजन्म
2. शिक्षा एवं विवाह
3. राज्याभिषेक
4. सिंहासन
5. वनवास
6. किष्किंधा
7. वीर हनुमान
8. लंका विध्वंस
9. मिलाप
10. अंत

रामजन्म

यह त्रेता युग की बात है।

सरयू नदी के तट पर यह कोशल राज्य था, जो वैभवशाली और अत्यंत संपन्न था और यहां की राजधानी का नाम अयोध्या था। कोशल में सूर्यवंशी नरेश चक्रवर्ती राजा दशरथ का राज्य था। राजा दशरथ अत्यंत पराक्रमी और कुशल शासक थे। उनके राज्य की प्रजा बहुत ही सुखी और समृद्ध थी। राजा दशरथ की तीन रानियां थी पटरानी का नाम कौशल्या, बीच वाली रानी का नाम सुमित्रा एवं सबसे छोटी रानी का नाम केकैयी था।

राजा दशरथ को सभी प्रकार के सुख प्राप्त थे किंतु एक सुख अभी भी उनके जीवन में नहीं था वह था संतान सुख। संतान प्राप्ति के लिए उन्होंने बहुत पूजा अनुष्ठान किये लेकिन अभी तक उनकी मनोकामना पूरी नहीं हो पाई थी। उनकी उम्र बढ़ती ही जा रही थी। उन्हें अपनी वृद्धावस्था और आसन्न मृत्यु का इतना दुख नहीं था जितना इस बात का था कि वे नि:संतान ही मर जाएंगे और सूर्य वंश को आगे बढ़ाने वाला कोई नहीं होगा। बस वह हमेशा यही सोचते रहते थे।

इन्हीं घनीभूत निराशा के क्षणों में उन्हें अपने गुरु वशिष्ठ की याद आई उन्होंने गुरु वशिष्ठ के आश्रम में जाने का निर्णय किया। राजा दशरथ को अपने आश्रम में देखकर गुरु वशिष्ट ने उनसे पूछा।

'अरे राजन आप स्वयं क्यों आए मैं ही चला आता और आप इतने दुखी दिखाई क्यों दे रहे हैं।'

गुरुदेव आप जानते हैं मुझे एक ही दुख है और वह है संतानहीनता। मैं अब बूढ़ा हो चला हूं और एक दिन मृत्यु को भी प्राप्त हो जाऊंगा। अगर संतान नहीं हुई तो सूर्यवंश का अंत निश्चित है। आप ही बताइए मैं क्या करूं।

गुरु वशिष्ट ने राजा दशरथ को पुत्रकाम यज्ञ का अनुष्ठान करने की सलाह दी। बस अयोध्या में पुत्रकाम यज्ञ की तैयारियां आरंभ हो गई और सरयू नदी के तट पर विशाल यज्ञ वेदी का निर्माण किया गया ऋषि शृंगी को यज्ञ के लिए अयोध्या बुलाया गया।

जिस समय अयोध्या में राम यज्ञ चल तैयारियां चल रही थी उस समय देवलोक में एक अलग ही समस्या प्रस्तुति थी। देवगढ़ रावण के अत्याचारों से अत्यंत परेशान थे। रावण को ब्रह्मा से अभयदान मिला हुआ था इसलिए वह निडर होकर देवताओं को सता रहा था। सच्चाई तो यह थी कि देवताओं के पास भी रावण को पराजित करने का कोई कारगर उपाय नहीं था।

रावण के इस बढ़ते अत्याचार और अहंकार के चलते सभी देव मिलकर ब्रह्मा जी के पास गए और उसके प्रकोप से बचाने का अनुरोध किया। ब्रह्माजी बोले निःसंदेह दरअसल रावण ने अपनी तपस्या से मुझे प्रसन्न करके वर मांगा था उसे देव, राक्षस अथवा गंधर्व कोई नहीं मार सके। किंतु वह मानव के हाथों से नहीं बच सकता।

पर पृथ्वी पर ऐसा मानव है कौन यही एक प्रश्न था इसके लिए उन्होंने सभी देवगणों को विष्णु जी के पास भेज दिया। देवगन विष्णु जी के पास गए और अपनी समस्या बताई। विष्णु जी ने विचार किया और बोला

ठीक है, पृथ्वी पर सूर्यवंशी नरेश राजा दशरथ संतान प्राप्ति के लिए महान यज्ञ कर रहे हैं वह एक अच्छे एवं पराक्रमी राजा है मैं उन्हीं के यहां पुत्र के रूप में जन्म लूंगा और कालांतर में रावण का वध करके तीनों लोकों को रावण के अत्याचार से मुक्त करूंगा।

इधर यज्ञ समाप्ति के पश्चात ऋषि शृंगी ने अग्निकुंड में घृताहुति दी और अग्निकुंड से भारी लपटों के साथ एक स्वर्ण कलश निकला। ऋषि शृंगी ने स्वर्ण कलश राजा दशरथ को देते हुए कहा।

राजन इसमें खीर है जो देवताओं ने इस यज्ञ से प्रसन्न होकर आपके लिए भेजी है आप यह खीर अपनी रानियों को खिला दें उन्हें अवश्य ही संतान प्राप्ति होगी। यह सुनकर राजा दशरथ का खुशी का ठिकाना नहीं रहा और स्वर्ण कलश लेकर रानियों के पास जा पहुंचे और तीनों रानियों ने खीर का पान किया। समय आने पर तीनों ही रानियां गर्भवती हो गई और चैत्र शुक्ल नवमी तिथि में कर्क लग्न में कौशल्या ने सबसे पहले एक संतान को जन्म दिया और यही राम थे। राम साक्षात भगवान का ही अवतार थे भगवान विष्णु ने ही धर्म की रक्षा के लिए पृथ्वी पर राम के रूप में अवतार लिया था। इसके बाद सुमित्रा को दो पुत्र रत्न प्राप्त हुए जो लक्ष्मण और शत्रुघ्न थे और छोटी रानी के कई ने भरत को जन्म दिया।

जल्दी ही यह खबर पूरे अयोध्या में फैल गई और पूरे अयोध्या में प्रसन्नता की लहर दौड़ चुकी थी क्योंकि आज सूर्यवंश को उनके आग भविष्य के राजकुमार मिल चुके थे।

शिक्षा एवं विवाह

थोड़ा वक्त गुजरा छः वर्ष की आयु में चारों राजकुमारों का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। राजा दशरथ ने उन्हें महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में शिक्षा अर्जन के लिए भेज दिया। राम, लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न ने आश्रम में नियमपूर्वक रहकर विद्यार्जन किया और चारों राजकुमारों ने समयानुसार विद्या सफलतापूर्वक अर्जित कर ली और वे वेद, पुराण, इतिहास, शास्त्र, अस्त्र आदि के अलावा संपूर्ण कलाओं में पारंगत हो गए। राजा दशरथ अपने पुत्रों की योग्यता व शिक्षा दीक्षा से बहुत संतुष्ट थे और चारों का ही यश अल्पायु में ही चारों ओर फैलने लगा था।

एक दिन राजा दशरथ ने राजगुरु वशिष्ट से कहा।

गुरुदेव राजकुमार बड़े हो गए हैं अब मेरा समय भी पूरा हो चला है बस यही इच्छा है कि राजकुमारों का विवाह समारोह देख लूं।

इस पर गुरुदेव ने उत्तर दिया राजन मेरी भी यही सहमति है।

तो फिर देश देर किस बात की। राजकुमारों के विवाह के लिए राजा दशरथ ने कन्याओं की खोज का आदेश दिया।

राजकुमारों के विवाह के बारे में विचार-विमर्श चल ही रहा था कि तभी द्वारपाल ने दरबार में प्रवेश किया एवं बताया कि महामुनि विश्वामित्र उनसे मिलना चाहते हैं। राजा दशरथ तत्काल अपने आसन से उठे और स्वयं जाकर महर्षि विश्वामित्र का स्वागत किया।

विश्वामित्र महर्षि का पद प्राप्त करने से पहले एक क्षत्रिय नरेश थे उनका नाम राजा कौशिक था और किसी कारणवश उन्होंने महर्षि बनने की ठानी। राजा दशरथ के दरबार में ऋषि विश्वामित्र को आदर पूर्वक लाया गया। राजा दशरथ ने विश्वामित्र से उनके आगमन का कारण पूछा। विश्वामित्र बोले

राजन में एक यज्ञ कर रहा हूं लेकिन जब यज्ञ समाप्त होने का समय आता है तभी मारीच और सुबाहु नामक दो राक्षस आते हैं और यज्ञ वेदी पर हड्डियां और मांस फेंक कर यज्ञ को अपवित्र कर उसे भंग कर देते हैं। यूं तो मैं चाहूं तो उन दोनों को पल भर में शाप देकर नष्ट कर सकता हूं किंतु ऋषियों के लिए क्रोध करना उचित नहीं इसलिए मैं आपके पास आया हूं आप राजा हैं और मैंने सुना है कि आपका पुत्र राम समर्थ है वह चाहे तो मुझे इस कष्ट से उबार सकता है इसलिए आप राजकुमार राम को मुझे प्रदान कीजिए मैं उसे अपने साथ लेकर जाना चाहता हूं।

यह सुनकर राजा दशरथ अत्यंत चिंतित हो गए और उन्होंने स्वयं विश्वामित्र के साथ चलने की बात कही। किंतु विश्वामित्र रामअवतार के रहस्य से परिचित थे इसलिए उन्हें राम पर पूर्ण विश्वास था। अंत में राजा दशरथ राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ ले जाने पर सहमत हो गए।

विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को लेकर दरबार से निकले। मार्ग में विश्वामित्र आगे आगे चल रहे थे और उनका अनुसरण करते हुए राम लक्ष्मण उनके पीछे। दोनों के कंधों पर धनुष रखे हुए थे। विश्वामित्र ने उन्हें रास्ते में बला और अतिबला नामक विद्या सिखाई। इन विद्याओं को जानकर मानव मात्र अजय तथा यशस्वी हो जाता है।

अगले दिन प्रात: दोनों राजकुमार विश्वामित्र के साथ आगे बढ़े मार्ग में अंगदेश पड़ा गंगा सरयू के संगम पर पहुंचे। विश्वामित्र के साथ दोनों ने यहां कामाश्रम में रात

बिताई और दूसरे दिन उनकी अगली आगे की यात्रा आरंभ हुई। इसके बाद विश्वामित्र राम और लक्ष्मण गंगा तट पर पहुंचे वहां के वनवासियों ने उन्हें एक नौका दी जिस पर बैठकर उन्होंने नदी पार की।

आगे सघन वन था और वन में अनेक पशुओं का स्वर गूंज रहा था और भयानक अंधकार छाया हुआ था। राम ने विश्वामित्र से उस वन के बारे में पूछा विश्वामित्र ने बताया कि आज तो यह जंगल बहुत ही भयानक है लेकिन यहां पर कभी समृद्धि देश बसे हुए थे लेकिन सुंद नामक राक्षक की पत्नी ताड़का और उसके साथ आया उसका पुत्र मारीच ने मिलकर इस समृद्ध देश क्षेत्र को तहस-नहस कर डाला इस हरे भरे क्षेत्र को तबाह कर दिया है। तुम इस तड़का को मारकर पृथ्वी के पाप को समाप्त कर सकते हो।

राम ने कहा मुनिवर आपकी आज्ञा शिरोधार्य मैं ताड़का को मारकर मानव मात्र का अवश्य कल्याण करूंगा

राम ने अपना धनुष उठाया और ताड़का को लहूलुहान कर मृत्यु लोक पहुंचा दिया। ताड़का के मरते ही वह सुनसान और निर्जन इलाका पहले की भांति रमणीक एवं वैभव में बन गया। इससे प्रसन्न होकर विश्वामित्र ने वर्षों की तपस्या से प्राप्त अस्त्र शस्त्रों का ज्ञान राम को दिया।

तब वे सिद्धाश्रम पहुंचे और विश्वामित्र ने बताया कि मैंने अपना यज्ञ यहां निर्विघ्न समाप्त करने की बहुत कोशिश की किंतु राक्षसों के विरोध के कारण मैं इसमें सफल नहीं हो सका हूं। राक्षस आकाश मार्ग से आकर खून हड्डियां और मांसपेशियां को अशुद्ध कर देते हैं अब तुम्हें ही इससे हमारी रक्षा करनी होगी। राम और लक्ष्मण ने यह आग्रह खुशी-खुशी स्वीकार किया। प्रात: काल सभी तपस्वी यज्ञ स्थल पहुंचे और

ऋषि विश्वामित्र ने यज्ञ कुंड में अग्नि प्रज्ज्वलित की और अगले ही पल वातावरण में पवित्र श्लोकों के स्वर गूंजने लगे। पांच रातें तो निर्विघ्न समाप्त हो गई। जब छठी रात आई तो आकाश में शोर गूंजने लगा राम लक्ष्मण समझ गए कि यह राक्षस मारीच और सुबाहु अपने साथियों के साथ आ चुका है। हाथों में अपवित्र वस्तु में लेकर जैसे ही राक्षस सेना निकट पहुंची तो राम और लक्ष्मण ने तीरों की वर्षा करके राक्षसों को मारना शुरू कर दिया। राम के एक बाण से तो सुबाहि जलकर भस्म हो गया वहीं दूसरे बाण से मारीच लगभग आठ सौ मील उड़ता हुआ दूर जाकर गिरा। इसके अलावा आए समस्त राक्षस तीरों की धारा मैं तड़प तड़प कर मर गए और यज्ञ निर्विघ्न समाप्त हो गया सारा वातावरण राम-लक्ष्मण की जय जयकार से गुजरने लगा।

उस समय सिद्धाश्रम में यह सूचना पहुंची कि मिथिला नरेश राजा जनक अपनी पुत्री के विवाह के लिए स्वयंवर अनुष्ठान कर रहे हैं। विश्वामित्र की इच्छा थी कि इस अनुष्ठान में राजकुमार राम भी भाग ले। उन्होंने राम को इस स्वयंवर में भाग लेने की इच्छा प्रकट की। राम ने कहा, जैसी आपकी आज्ञा मुनिवर।

महर्षि विश्वामित्र ने बताया कि राजा जनक के पास एक अद्वितीय शिव धनुष है जो देवताओं ने जनक के पूर्वजों को यज्ञ से प्रसन्न होकर दिया था। इसकी विशेषता यह है कि इसे बली से बली प्राणी भी नहीं उठा सकता अनेकों वीर राजाओं के राजकुमारों ने धनुष उठाया उठाना चाहा किंतु कोई सफल नहीं हो सका। राजा जनक की एकमात्र शर्त यही थी जो कोई भी यह धनुष उठा लेगा उसे ही सीता पति के रूप में स्वीकार करेगी। महर्षि विश्वामित्र का शुभ मुहूर्त पर राम और लक्ष्मण के साथ मिथिला की ओर चल पड़े एवं मिथिला नगर पहुंच गए।

यहां चारों और सीता के स्वयंवर की चर्चा थी विश्व के कोने-कोने से अनेकों राजा वह राजकुमार आए हुए थे। यज्ञशाला में वेद पाठ के स्वर उच्चारित किए जा रहे थे पूरी मिथिला फूलों से सुसज्जित थी राजा जनक को जैसे ही विश्वामित्र एवं दशरथ नंदन राम एवं लक्ष्मण के आने की सूचना मिली तो वे स्वयं उनका आदर सत्कार करने पहुंचे एवं अपनी प्रसन्नता व्यक्त की विश्वामित्र ने राम एवं लक्ष्मण का परिचय करवाया एवं राम के बारे में की वीरता के बारे का बखान राजा जनक से किया।

अगले दिन स्वयंवर का कार्यक्रम शुरू हुआ। जनक के जेष्ठ पुत्र ने राजा की घोषणा सुना दी कि जो भी इस पिनाक धनुष को उठाकर इस पर प्रत्यंचा चढ़ाएगा उसे ही सीता वरमाला पहनाएगी। देश-विदेश से आए राजा एवं राजकुमारों ने एक-एक करके धनुष के पास गए एवं धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने की कोशिश की पर दुर्भाग्यपूर्ण कोई भी राजा अथवा राजकुमार धनुष को हिला भी नहीं सका और सभी असफल होकर लज्जा और ग्लानि से चुपचाप अपने अपने आसनों पर सिर झुकाए बैठ गए।

सखियों से घिरी सीता हाथ में वरमाला लिए वहीं पर खड़ी हुई यह देख रही थी तब विश्वामित्र के आदेश पर राम धनुष के पास गए और उन्होंने सीता को देखा। सीता की दृष्टि भी राम पर गई, राम मंद मंद मुस्काए और इसके बाद उन्होंने हाथ बढ़ाकर बड़े ही सहज भाव से धनुष उठा लिया जैसे कोई फूल हो और अगले ही पल उन्होंने धनुष की प्रत्यंचा इतनी जोर से खींची की भयंकर गर्जना करता हुआ धनुष बीच में ही दो खंडों में टूट गया। धनुष के टूटते ही पृथ्वी कांप उठी और चारों और धनुष के टूटने का भव्य धमाका गूंज गया।

तब प्रसन्न मुद्रा में राजा जनक अपने आसन से उठे और उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए बोले।

मैं सूर्यवंशी राजकुमार राम के शौर्य से अत्यंत प्रसन्न हुआ। सचमुच इनके रहते पृथ्वी वीरों से कभी वंचित नहीं रह सकती। इन्होंने तो असंभव को भी संभव कर दिया आज से सीता राम की हुई। मुझे अपनी पुत्री सीता के लिए ऐसा सुयोग्य वर मिला यह मेरी पुत्री का सौभाग्य है। जाओ पुत्री राम के गले में वरमाला डाल दो। सीता धीरे धीरे कदम उठाती हुई धनुष वैदी की ओर बढ़ी जहां राम प्रेम भाव से सीता को देख रहे थे। सीता ने हाथ उठाकर राम के गले में वरमाला डाल दी और आजन्म उनकी हो गई।

विश्वामित्र ने दूत को अयोध्या भेजकर महाराज दशरथ को यह शुभ सूचना पहुंचाई एवं विवाह में आने का निमंत्रण भेजा। राजा दशरथ अपने जेष्ठ पुत्र के विवाह की सूचना पाकर फूले न समाए एवं बोले

हम चलेंगे शीघ्र ही मिथिला की यात्रा का सारा प्रबंध किया जाए। इसके बाद राजा दशरथ मिथिला पहुंचे और अपने स्वागत एवं सत्कार को देखकर वह हैरान हो गए। सीता का विवाह राम के साथ बड़ी धूमधाम से हुआ, उसी अवसर पर सीता की छोटी बहन उर्मिला लक्ष्मण को ब्याही गई। इसके अतिरिक्त महाराज जनक के भाई कुशध्वज की दो पुत्रियों मांडवी और श्रुतिकीर्ति का विवाह राम के शेष दो छोटे भाइयों भरत तथा शत्रुघ्न के साथ संपन्न हुआ।

राज्याभिषेक

राजमहल में आनंद अपने चरमोत्कर्ष पर था। विवाह के पश्चात अयोध्या लौटने के अवसर पर भरत के मामा युद्धाजित भी पधारे हुए थे, युद्धाजित के साथ भरत एवं शत्रुघ्न ननिहाल केकैयी देश चले गए।। राम को पाकर क्या देशवासी बल्कि सारी मानवता अपने को धन्य मानती थी। राम ने अपना पूर्ण संपूर्ण जीवन जनहित में समर्पित कर दिया। अपने आचरण से उन्होंने सब का हृदय जीत लिया था। राम बड़ों का आदर करते थे और छोटों को स्नेह देते थे। विद्वानों के प्रति उनके हृदय में असीम सम्मान के भाव थे। ब्राह्मणों ऋषि-मुनियों के प्रति पूजा भाव था, राम राजनीति में निपुण थे तो युद्ध विद्या में निष्णात, अत्याचारों के संहारक और धर्मात्माओं के रक्षक थे।

प्रेम और अनुराग में बारह वर्ष कैसे बीत गए इसका किसी को पता भी ना चल सका, राजा दशरथ वृद्ध हो चले थे राज्य कार्य से निवृत्त होकर अब वे आराम करना चाहते थे। अपने चारों पुत्रों के प्रति उन्हें बराबर लगाव था, हां राम के प्रति कुछ विशेष झुकाव जरूर था क्योंकि राम मेरे सारे गुण मौजूद थे जो एक योग्य शासक में होने चाहिए अत: राजा दशरथ अपने बाद राम को ही कोशल नरेश बनाना चाहते थे।

एक दिन राजा दशरथ ने सभी प्रमुख जनों ऋषि-मुनियों में मंत्रियों को बुलवाया दरबार में सभा का आयोजन हुआ और कहा,

हे गुणीजनों अब तक मैंने अपने सामर्थ्य अनुसार प्रजा का पालन किया अब लेकिन मैं वृद्ध हो चला हूं और चाहता हूं यह महत कार्यभार राम को सौंप दूं राम समर्थ है,

नीतिवान है, शास्त्रों में पारंगत हैं, सुशील है, सदाचारी हैं, प्रजा वत्सल है उन्हें सिंहासन पर बिठाना आपके विचार से कैसा रहेगा।

दरबार में उपस्थित सभी लोगों बहुत ही प्रसन्न हुए और सभी ने एक स्वर में कहा, निश्चय ही उचित विचार है महाराज, राम जैसा राजा पाकर तो हम धन्य हो जाएंगे। बस फिर क्या था राज्याभिषेक का समय चैत्र मास निश्चित किया गया। राम ने भी राजा दशरथ की आज्ञा को स्वीकारा। अगले ही दिन राम का राज्याभिषेक करना था सो राम माताओं से आशीर्वाद लेकर व्रत में लग गए। अयोध्या में जन मन में असाधारण उत्साह छा गया आखिर क्यों न छाए अगले ही दिन उनके प्राण प्रिय राम का राजतिलक जो होना था।

सिंहासन

अयोध्या में उत्साह छाया हुआ था सभी जगह पूरे अयोध्या को दुल्हन की तरह सजाया गया था कल राम का राज्याभिषेक जो होना था लेकिन इस सुंदर सजी हुई अयोध्या को राज महल के झरोखे से देख रही थी केकैयी की परिचारिका मंथरा। वह केकैयी की निजी परिचारिका ही नहीं बल्कि दूर की रिश्तेदार भी थी भला वह कैसे सहती की कौशल्या के पुत्र का राजतिलक हो केकैयी का पुत्र भी तो राजा बन सकता है। रामराजा बना तो कौशल्या कह लाएगी राजमाता फिर केकैयी का क्या सम्मान रहेगा। ऐसा सोचकर वह अगले ही पल तेज कदमों से चलती हुई केकैयी के कमरे में जा पहुंची और तेज स्वर में बोली।

वाह तुम यहां सो रही हो और उधर तुम्हारा भाग्य सोने जा रहा है तुम्हें कुछ पता भी है क्या अनर्थ होने जा रहा है।

केकैयी हड़बड़ा कर उठ बैठी और संयम से बोली

क्या बात है मंथरा इतना तेज क्यों चीख रही हो।

तुमने कुछ सुना कर राम का राजतिलक होगा कौशल्या राजमाता कहलाएगी

यह तो बड़ी खुशी की बात है इसमें अनर्थ के साथ राम तो इसके उपयुक्त है और कौशल्या की राजमाता बनने से मुझे क्या आपत्ति होगी। राम जिस प्रकार कौशल्या का पुत्र है वैसा ही मेरा भी है।

मंथरा बोली, कितनी भोली हो तुम के कई तुम्हें क्या पता राम के राजा बनते ही तुम्हारी दुर्दशा कैसी होगी मैं सदा तुम्हारा हित ही तो चाहती हूं सो यह अन्याय मुझसे देखा नहीं जाता देखो तो कैसा षड्यंत्र रचा गया है भरत को ननिहाल भेज दिया गया और पीछे से राम को राजा बनाया जा रहा है। तुम कौशल्या की दासी कहलाओगी और भरत राम का दास चाहे कुछ भी हो कौशल्या है तो तुम्हारी सौतन ही ना। भला वह तुम्हें कैसे चैन से रहने देगी अगर राजा दशरथ तुम्हें बहुत चाहते हैं तो फिर तुम्हारे पुत्र को राजा क्यों नहीं बनाया जा रहा। यह सरासर धोखा है तुम्हें बहला-फुसलाकर अंधेरे में रखा गया है। तुम्हारा भला बुरा सोचना मेरा फर्ज है और इसीलिए मैं यहां तुम्हारे साथ आई हूं। तुमने सोचा है की राम के राजा बनने के पश्चात भरत को भी राज्य से निष्कासित कर दिया जाएगा और तुम भी जिंदगी भर कमरे में रोती रहोगी।

बोलते बोलते मंथरा की सांसें फूल गई, मंथरा बार-बार यही बात दोहराए जा रही थी और उसने केकैयी के मन में भी संदेह का बीज प्रस्फुटित कर दिया। आखिर केकैयी भी तो एक मां ही थी। उसने सोचा क्या जाने राम राजा बनने के पश्चात बदल जाए। तब केकैयी बोली।

मंथरा मेरा दिल बैठा जा रहा है अब तू ही बता कि मैं क्या करूं और इस अनिष्ट से कैसे बचा जाए।

मंथरा ने योजना बनाई और कहा

तुम्हें याद होगा कि राजा दशरथ शंभर नामक असुर से युद्ध के दौरान बुरी तरह घायल हो गए थे तब तुम ही रथ चलाकर युद्धभूमि से उन्हें बाहर सुरक्षित लेकर आई थी और तुम्हारी सेवा और देखभाल से ही वे स्वस्थ हो सके थे और इसके बदले में उन्होंने तुम्हे

दो वर प्रदान किए थे और तुमने कहा था कि जब मुझे जरूरत होगी मैं वर मांग लूंगी। आज वह समय आ गया है तुम उनसे दो वर मांग लो।

क्या मांगू, केकैयी बोली

मंथरा ने बताया पहला वर यह मांगो कि भरत का राजतिलक हो और दूसरा वर यह कि राम को चौदह वर्ष का वनवास हो। अपने मान सम्मान और वैभव को बचाने रखने का यही एकमात्र तरीका है। चौदह साल वनवास करने के बाद राम को सारी प्रजा विस्मृत कर देगी और पूरे राज्य में भरत की जय जयकार होगी।

केकैयी, मंथरा के बहकावे में आ गई और उसका चेहरा खुशी से चमक उठा और वह तत्काल उठी और अपना राजसी ठाठ बाट उतारा और बालों को बिखेर मलिन वस्त्र पहने दुख की साकार मूर्ति बन कोप भवन में पहुंच गई और उदासी की बिखेरकर वह भूमि पर ही लेट गई।

इधर दरबार में मंत्रणा समाप्त हुई राजा दशरथ खुशी-खुशी महल पहुंचे और सभी को राम के राजतिलक की सूचना दी किंतु केकैयी को अपने कक्ष में न पाकर उन्हें हैरानी हुई और वह केकैयी को इधर-उधर उसे ढूंढ़ने लगे। ढूंढ़ते ढूंढ़ते वे कोपभवन पहुंचे जहां केकैयी को मलिन वस्त्रों में लेटे देखकर वे घबराकर कांप उठे और बोले।

प्राण प्रिय, यह क्या, तुम इस हालत में कोप भवन में। किसी ने कुछ कह दिया है क्या या किसी ने तुम्हारा अपमान किया है।

केकैयी बोली, नहीं मेरा अपमान किसी ने नहीं किया।

तो फिर इस कोपभवन में क्यों।

मैं यह तभी बताऊंगी जब आप मेरी मनोकामना पूरी करने का वचन मुझे देंगे।

मैंने भला तुम्हारी कौन सी बात टाली है केकैयी। बोलो तुम क्या चाहती हो, मैं यह वचन देता हूं कि मैं तुम्हारी प्रत्येक मनोकामना पूरी करूंगा।

तब केकैयी बोली।

तो सुनिए महाराज आपको याद होगा वर्षों पूर्व आपने मुझे दो वर दिए थे। तब मैंने वे वर नहीं मांगे थे लेकिन आज मैं आपसे वे मांगना चाहती हूं। मेरा पहला वर यह है कि जो राम का राजतिलक हो रहा है बजाए राम के भरत का राजतिलक हो और दूसरा यह कि राम को चौदह वर्ष के वनवास के लिए एक तपस्वी के वेश में भेज दिया जाए। इसे पूर्ण कर अपना वचन निभाए और इसे टालकर रघुकुल की रीत को कलंकित न करें।

राजा दशरथ यह सुनते ही सुन्न रहे गए केकैयी के कटु वचन गर्म लावे की तरह उनके कानों में घुलते जा रहे थे। उनकी आंखें आंसू से भर आई और वे मर्म आहत होकर बोले।

केकैयी राम तो तुझ पर भी उतनी ही श्रद्धा रखता है जितनी दूसरी माताओं पर फिर उसके प्रति यह दुर्भावना क्यों। जिस राम का सारा संसार गुणगान करता है तुम उसे वनवास देने को कह रही हो। आखिर किस अपराध में मैं उसे महल से निकालूं।

केकैयी बोली, महाराज आपने मुझे वचन दिया है और यदि आपने मेरा वचन तोड़ा तो दुनिया को यह पता चल जाएगा कि रघुवंशी राजा दशरथ ने वचन भंग किया है और आप सभी की नजरों से गिर जाओगे। आप कुछ भी कहिए मैं अपने विचार से जरा भी

टस से मस नहीं होऊंगी। मैं यह कभी बर्दाश्त नहीं कर सकती कि मेरा पुत्र दास की तरह जीवन व्यतीत करें।

राजा दशरथ फूट-फूट कर रोने लगे उन्होंने के केकैयी को मनाने का भरसक प्रयास किया लेकिन वह टस से मस नहीं हुई। राजा दशरथ समझ गए कि वह नहीं मानेगी। और वे घायल पक्षी की तरह तड़प कर रह गए और अवरुद्ध कंठ से बोले।

वचन हार चुका हूं केकैयी तो वही होगा जो तुम चाहती हो।

इधर राज महल में भारी चहल-पहल थी राजतिलक की सारी तैयारियां पूरी हो चुकी थी। लोग उत्सुकता से उस पल की प्रतीक्षा कर रहे थे जब राम के मस्तक पर राजमुकुट रखा जाएगा। तब वशिष्ठ ने मंत्री सुमंत से कहा।

शीघ्र महाराज को दरबार में ले आओ विलंब हो रहा है ताकि शुभ मुहूर्त से राम का राजतिलक किया जा सके।

सुमंत तत्काल राजा दशरथ के पास पहुंचे एवं राज अभिषेक की कार्यवाही में भाग लेने को कहा। राजा दशरथ शोक की साकार प्रतिमा बने हुए सुमंत को देखते देखते मूर्छित हो गए। सुमंत एकदम से घबरा गया। तभी केकैयी पास आई और बोली।

घबराइए नहीं मंत्री दरअसल महाराज रात भर सो नहीं सके और राजतिलक के बारे में ही सोचते रहे आप जाइए एवं राम को यहां भेज दीजिए।

सुमंत राम के पास पहुंचे एवं उन्होंने कहा

रानी केकैयी का आदेश है राजकुमार, आप तुरंत उनके प्रकोष्ठ में जाइए जहां महाराज आपसे कुछ कहना चाहते हैं।

राम उसी समय राजा दशरथ के पास केकैयी के प्रकोष्ठ में पहुंचे एवं माता-पिता का चरण स्पर्श करके बोले आज्ञा की जय राजा दशरथ ने नम आंखों से पुत्र की ओर देखा और आंखों से अश्रु धारा बह निकली और देर तक पुत्र को देखने का साहस नहीं कर सके। राम बोले

हे माता महाराज को क्या हो गया वे मुझसे बोलते क्यों नहीं और इतनी दुखी क्यों हो गए क्या मुझसे अनजाने में कोई अपराध हो गया है।

यही मौका था जब कि कल को चतुराई से काम लेना था। तब केकैयी बोली

महाराज ने एक बार प्रसन्न होकर मुझे दो वरदान दिए थे आज मैंने वे दोनों मांग लिए तो वे पछता रहे हैं यह तो रघुकुल रीत के विपरीत है। तो तुम ही पिता की कुछ सहायता करो ताकि उन वचन उन पर वचन भंग का कलंक न लगे। मैंने जो दो वर मांगे थे उनमें पहला यह है कि भरत को राज्य मिले और दूसरा यह कि तुम्हें चौदह वर्ष का वनवास और पुत्र का एकमात्र कर्तव्य यही है कि पिता के यश के लिए उसकी वचन रक्षा के लिए स्वयं को सत्य मार्ग पर समर्पित कर दें तो बेहतर यही है कि तुम इसी समय इन वचनों को निभाओ।

यह सुनकर राम के चेहरे पर मुस्कुराहट खिल गई। उन्हें इस बात का तनिक भी खेद नहीं हुआ कि माता केकैयी ने इस प्रकार के कटु वचन बोले हैं। वे मधुर स्वर में बोले

हे माता बस इतनी सी बात है, मुझे आपका आदेश स्वीकार है, मैं तुरंत वनवास को चला जाऊंगा एवं भरत का ही राज्य तिलक होगा। इसमें पिता को दुखी होने की कोई आवश्यकता नहीं है पिता के वचनों की पूर्ति के लिए तो मैं एक राज्य क्या तीनों लोकों के राज को त्याग सकता हूं। आप भरत को तुरंत ननिहाल से बुलाएं एवं महाराज को धर्म संकट से मुक्त करें।

बेचारे दशरथ का कलेजा फटा जा रहा था फिर क्या कर सकते थे वचन जो हार चुके थे राजा दशरथ से यह बर्दाश्त नहीं हो सका और उनके कंठ से एक गहरी सांस निकली और वे मूर्छित हो गए । राम ने मूर्छित पिता को संभाला एवं अभिवादन किया और प्रकोष्ठ से बाहर निकल गए। राम को इस बात का तनिक भी अफसोस नहीं था कि उनके हाथों से सत्ता निकल गई उनके चेहरे पर पहले जैसी ही सौम्यता छाई हुई थी बल्कि वे तो इस बात से बहुत ही प्रसन्न थे कि उन्हें पिता के वचनों को निभाने का एक अवसर मिला है।

राम ने कौशल्या को भरत का राजतिलक एवं स्वयं का चौदह वर्ष का वनवास के बारे में अवगत कराया। कौशल्या जो राम के राजतिलक का इंतजार कर रही थी उसके प्रसन्नता से दमकते चेहरे पर विषाद की गहरी रेखाएं छा गई। वे मूर्छित सी हो गई तब राम ने आगे बढ़ कर उन्हें संभाला। कौशल्या के अधिक मना करने के बाद भी राम अपने वचन पर अडिग रहे तब कौशल्या समझ गई कि राम को अपने पद से वितरित करना संभव नहीं है। वे नम आंखों से कांपते स्वर में बोली।

जाओ पुत्र ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें मैं जानती हूं तुम अपने पद से नहीं भटक सकते तुम अपने पिता के वचनों को पूरा करने के लिए कुछ भी कर सकते हो।

अपनी माता से विदा लेकर राम सीता के प्रकोष्ठ में पहुंचे और सीता को भी अपने वनवास जाने के बारे में अवगत कराया। सीता की बड़ी-बड़ी आंखों से अश्रु की बूंदें लुढ़क पड़ी और बोली

हे आर्यपुत्र, मुझे छोड़कर आप वनवास भोगेंगे और मैं यहां महलों में सुख से रहूंगी। एक पत्नी पति के कर्म फल भुगतती है। मैं आपकी अर्धांगिनी हूं पति की पूरक। सो जो वनवास आपको मिला है वही मुझे भी मिलना चाहिए। आप अकेले वनवास नहीं जाएंगे मैं आपके साथ चलूंगी। महल के सुख आपके वियोग से मैं मेरे लिए व्यर्थ हैं।

ऐसा कहकर सीता की आंखों से झर झर अश्रु बहने लगे। राम सीता का ऐसा अनुराग देखकर अभिभूत हो उठे उन्होंने सीता को आलिंगन में लिया और बोले।

हे सीते, तुमने तो मुझे अजीब दुविधा में डाल दिया मैं तो चाहता था कि तुम्हें अपने साथ वन का कष्ट न भोगने दूं। पर सच तो यह है कि तुम्हारे बिना चौदह वर्षों का वनवास काटना मेरे लिए भी मुश्किल है। चलो यह अच्छा हुआ कि तुम मेरा साथ देना चाहती हो। अब देर ना करके हमें यथाशीघ्र वन की ओर चलने की तैयारी करनी चाहिए।

राम व सीता व वल्कल वस्त्र पहने वनवास के लिए जाने को उद्यत हुए तो लक्ष्मण से नहीं रहा गया और वह राम व सीता के चरणों में गिर पड़े और रो-रो कर बोले।

मुझे किसके सहारे छोड़ कर जा रहे हैं आप लोग मैं आपको अकेले नहीं जाने दूंगा। कृपया मुझे भी साथ चलने की अनुमति दीजिए।

राम ने लक्ष्मण से को काफी समझाया लेकिन लक्ष्मण नहीं माने और उन्होंने लक्ष्मण को भी अपने साथ आने की आज्ञा दी।

सारे नगर में यह बात फैल गई कि राम चौदह वर्ष के लिए वनवास जा रहे हैं साथ में जनक नंदिनी सीता एवं भ्राता लक्ष्मण भी है। नगर के मार्गों के दोनों और लोगों की भीड़ जमा हो गई चारों और कोलाहल मचा हुआ था सभी महाराज के इस विचित्र निर्णय से आश्चर्यचकित थे। फिर महाराज से अंतिम विदाई लेने तीनों अपने महल से निकलकर राजमहल की ओर चल पड़े। राजा के प्रकोष्ठ में अन्य सभी लोग उपस्थित थे जिनमें माताएं, संबंधी, मंत्रीगण व गुरुजन थे। राजा दशरथ ने राम को देखते ही आवेग से आगे बढ़कर पुत्र का आलिंगन करना चाहा लेकिन वह उन तीनों को ऐसी अवस्था में देख कर बेहोश होकर नीचे गिर पड़े।

थोड़ी देर बाद उन्हें होश आया उन्हें एक पलंग पर लिटाया गया तब राम ने कहा।

महाराज मैं वन जा रहा हूं साथ में सीता व लक्ष्मण भी है। मैंने उन्हें बहुत रोकने की कोशिश की लेकिन उनकी हठ के आगे मुझे झुकना ही पड़ा। हमें आशीर्वाद दीजिए तातश्री।

दशरथ बोले, पुत्र मैं लाचार हूं ना चाहते हुए भी तुम्हें वन भेजने को विवश हूं। मैं तो इस वचन में बंधा हूं तुम नहीं। तुम चाहो तो यह वचन तोड़कर यही रह सकते हो।

राम बोले, ऐसा ना कहिए पिताश्री। माता पिता की आज्ञा मानना ही मेरा प्रथम कर्तव्य है।

ऐसा सुनकर राजा दशरथ की आंखों से आंसू बह निकले। उन्हें एक और ख्याल आया और उन्होंने मंत्री सुमंत को आदेश दिया कि वनवास को कष्ट विहीन बना दिया जाए। राम के साथ चतुरंगिनी सेना भेज दी जाए। अंगरक्षक और खास मित्र भी चले जाएं। उनके लिए पूर्ण व्यवस्था की जाए ताकि वनवास आनंद पूर्वक कट सकें।

उस समय केकैयी मुंह बनाकर गुस्से में बोली।

वाह महाराज खूब, अगर राम के साथ सेना, धनधान्य, साथी सभी चले गए तो भरत के लिए यहां क्या रह जाएगा। ऐसा हुआ तो मेरे वरों का अभिप्राय ही क्या रह जाता है।

तब राम मुस्कुरा कर बोले हे तात माता ठीक कहती हैं वन में भोग विलास की सामग्री ले जा कर क्या करूंगा। वहां तो मुझे तपस्वी के समान ही रहना है। बस हमें तन ढकने को वल्कल वस्त्र दे दीजिए।

केकैयी ने बिना समय गवाएं ही वस्त्र तीनों के हाथ में थमा दिए। बेचारे दशरथ क्या करते वह तो अर्ध मूर्छित अवस्था में यह सब देख रहे थे। सीता को ऐसी अवस्था में देखकर उनका दिल बैठे जा रहा था। थोड़ी ही देर में तीनों ने वल्कल वस्त्र धारण किए। सभी का अभिवादन किया और वहां से बाहर निकल आए।

रथ तैयार खड़ा था। राम, सीता व लक्ष्मण रथ पर सवार हुए तो अयोध्या के नर नारी बच्ची बूढ़े सभी रथ के पीछे दौड़ पड़े। राजा दशरथ भी रथ के पीछे जाने को उद्धत हुए लेकिन थोड़ी ही देर में रथ आंखों से ओझल हो गया और पीछे रह गई सिर्फ उड़ती हुई धूल।

कई प्रांतों व नदी नालों को पार करता हुआ रथ कोशल राज्य की दक्षिणी सीमा की ओर चला जा रहा था और नया सूरज उगने के साथ ही कोशल प्रदेश की सीमा आ गई। राम रथ से उतरे और हाथ जोड़कर कोशल राज्य की सीमा पर से राज्य से विदाई ली। तत्पश्चात वे पुन: रथ पर सवार हुए और अगस्त्य मुनि के आश्रम को पार करते हुए गंगा नदी के किनारे आ पहुंचे। गंगा तट के इस प्रदेश का राजा निषादराज गुह था और उसे भी राम के प्रति असीम श्रद्धा थी उसे जब यह सूचना मिली की राम ने गंगा तट पर डेरा डाला है तो वे अपने परिवार, मंत्रीगण एवं संबंधियों के साथ उनके दर्शन के लिए वहां पहुंचे। वह रात्रि तीनों ने उसी तट पर गुजारी निषादराज एवं सुमंत भी उन्हीं के साथ थे।

प्रात: काल राम ने निषादराज से अंतिम विदाई ली। निषादराज के कर्मचारियों ने एक सुंदर सी नाव तैयार की। राम, सीता व लक्ष्मण नाव में सवार होने लगे तब सुमंत ने नम आंखों से पूछा

हे दशरथ नंदन, अब मेरे लिए क्या आदेश है।

राम ने कहा, आपका काम समाप्त हुआ आर्य, अब आप अयोध्या लौट जाइए। नदी पार करके हम पैदल ही आगे की यात्रा करेंगे। राजमहल पहुंचकर माताओं के चरणों में हमारी वंदना पहुंचाएं और उन्हें बता दें कि वनवास में हम जरा भी दुखी नहीं हैं।

सुमंत की आंखों से आंसुओं की झड़ी बह निकली। सुमंत जाना तो नहीं चाहते थे परंतु मुश्किल से अयोध्या जाने को राजी हुए। तीनों ने नौका से गंगा की स्तुति करते हुए इसे पार किया। तीनों नाव से उतरे तब राम ने कहा।

लक्ष्मण अब हमारा वास्तविक वनवास आरंभ होता है। वन में संकटों की कमी नहीं, तो तुम आगे आगे चलो बीच में सीता और पीछे मैं तुम लोगों की रक्षा करता हुआ चलूंगा।

ऐसा कहकर वे तीनों आगे बढ़ चले।

राजमहल से सभी जा चुके थे। कौशल्या वही महाराज दशरथ के पास बैठी हुई थी तभी आधी रात को अचानक उनकी आंखें खुल गई और वे फिर राम को याद करने लगे तब उन्हें दुख पूर्वक कौशल्या से बोले।

मानव जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है। सच तो यह है कि एक बार युवावस्था में अनजाने में मैंने वृद्ध मां बाप के एकमात्र पुत्र श्रवण कुमार को बाण से मार डाला था। इसीलिए मुझे भी पुत्र वियोग मिला है। अब मुझसे और अधिक नहीं दिया जाएगा, मुझे मौत की पग ध्वनियां साफ सुनाई दे रही हैं, मेरा हृदय बैठा जा रहा है, आंखों के सामने अंधेरा छा रहा है, हे राम, हे लक्ष्मण, हे सीते, कहां हो, हे राम, हे राम।

इतना कहते-कहते उनकी धड़कन रुक गई, सांस के तार टूट गए, पुत्र वियोग से शोकाकुल राजा दशरथ के प्राण पखेरू उड़ गए।

महाराज के देहांत की खबर पलक झपकते ही पूरे अयोध्या में फैल गई चारों और शोक का वातावरण छा गया। तीनों माताएं कौशल्या एवं सुमित्रा एवं अन्य रानियां छाती पीट-पीटकर रुदन कर रही थी। अयोध्या पर यह दौरा आघात था। सारी नगरी उजाड़ हो गई थी।

तब वशिष्ठ मुनि के आज्ञानुसार अगले दिन दरबार में मंत्री व राजपुरुष एकत्र हुए एवं महाराज दशरथ के अंतिम घोषणानुसार वशिष्ठ मुनि ने भरत को केकैयी प्रदेश से बुलाने की बात कही। भरत एवं शत्रुघ्न अपने ननिहाल केकैयी प्रदेश से विदा ली एवं दुर्गम रास्तों को पार करते हुए आठवें दिन अयोध्या पहुंचे।

अयोध्या को एक नजर से देखते ही भरत को प्रतीत हुआ कि कुछ विपदा जरूर है। अयोध्या में पहले जैसी रौनक नहीं थी। भरत बहुत घबराए और रथ से उतरे और तेजी से महाराज दशरथ के प्रकोष्ठ में पहुंचे। उनका शयनयान खाली था तब वे माता केकैयी के पास पहुंचे। भरत को देखते ही केकैयी के चेहरे पर मुस्कुराहट छा गई वह खुश हो उठी और पुत्र को आलिंगन में ले कर बोली।

पुत्र अब मैं बहुत खुश हूं। यहां सब कुशल मंगल है तुम चिंता ना करो।

भरत ने पूछा, लेकिन माता हुआ क्या है। यहां तो मुझे सभी जगह उदासी दिखाई दे रही है।

केकैयी बोली, बेटा तुम्हारे परम यशस्वी पिता हमें छोड़ कर परमधाम चले गए हैं।

सुनकर भरत को बहुत आघात लगा। उससे रहा नहीं गया और वह फूट-फूट कर रोने लगे।

केकैयी बोली। पुत्र, व्यर्थ इतना शौक मत करो। अंतिम समय में भी तुम्हारे पिता बस राम, लक्ष्मण, और सीता को ही पुकारते रहे और तुम्हारा नाम तक नहीं लिया।

तब भरत ने आश्चर्य से पूछा, क्यों वे कहां है, क्या वह अंतिम समय पिता के समीप नहीं थे।

केकैयी एक पल के लिए तो खामोश रही लेकिन फिर उसने भरत को अपने वरों के बारे में एवं उनके वनवास जाने का कारण बता दिया और यह भी कहा कि अब राजगद्दी पर भरत ही शासन करेंगे। भरत के कानों को जरा भी विश्वास नहीं हुआ। भरत का सारा शरीर क्रोध से कांपने लगा वह तेज स्वर में बोले।

मां मैं जानता था कि स्वार्थ में अंधे होकर तुम ऐसा पाप करोगी। तुमने तो हमारे वंश को ही कलंकित कर दिया। नि:संदेह तुम्हारे कारण ही महाराज का निधन हुआ। सोचो तो माता कौशल्या और सुमित्रा भी पुत्र वियोग में कितनी तड़प रही होंगी। आज तुम्हारे कारण मैं अनाथ हो गया मां। मुझे ऐसा राज्य और सत्ता नहीं चाहिए। मैं राम व लक्ष्मण को वापस ले आऊंगा और उन्हें ही सिंहासन पर बिठाऊंगा। मैं चला।

तब सभी विशिष्ट मंत्रीगण भरत के पास पहुंचे और बोले राजकुमार महाराज की इच्छा थी कि आप ही राज्य संभाले तो शीघ्र सत्ता संभाल कर देश का कल्याण करें। राजा की मृत्यु के पश्चात हमेशा बड़ा पुत्र ही गद्दी पर बैठता है। यही नियम है और इसी में वंश की मर्यादा भी है।

भरत बोले, क्षमा करें मैं सिंहासन पर नहीं बैठ सकता। मैं वन जाकर राम को वापस ले आऊंगा और वे ही कोशल के सिंहासन पर बैठने के अधिकारी हैं। कृपया मेरे जाने का प्रबंध करें। मैं चतुरंगिनी सेना के साथ यथाशीघ्र यहां से प्रस्थान करना चाहता हूं।

बस फिर क्या था सभी भरत के जाने की व्यवस्था में लग गए और भरत रथ पर सवार होकर निकल पड़े। उनके साथ न सिर्फ चतुरंगिनी सेना थी, बल्कि समस्त मंत्रीगण, तीनों माताएं और अनेक नगर निवासी भी थे। निषाद ग्रह निषाद राज गुम को जब यह सूचना मिली कि भरत राम को वापस लेने आए हैं ताकि वह राज की गद्दी संभाल सके एवं जलक जन कल्याण करें तो निषादराज ने सैकड़ों छोटी-छोटी

नौकाओं से भरत की सेना एवं लोगों उसके साथ आए लोगों को गंगा के उस पार पहुंचा दिया।

राम ने चित्रकूट में अपना तेरा डाला हुआ था एवं वनवास काट रहे थे। भरत जैसे ही राम से मिले तो उनके चरणों पर फूट-फूटकर रोए एवं पिता की मृत्यु का समाचार सुनाया। राम अत्यंत दुखी हुए।

भरत बोले मुझे ऐसा राजपाट नहीं चाहिए भैया उस पर आपका अधिकार है। अयोध्या चलकर सिंहासन संभालिए।

राम बोले मैंने पिता के आदेश से वन गमन किया है एवं उनके वचन को पूरा करना ही मेरा धर्म है। मैं वचन तोड़कर उनकी आत्मा को कष्ट नहीं पहुंचाना चाहता।

भरत की काफी कोशिशों के बावजूद भी राम अपने निर्णय से टस से मस नहीं हुए। भला वे अपने पिता के वन को वचन को कैसे टालते। तब भरत सभी के साथ राम की चरण पादुका लेकर चित्रकूट से विदा हो गए। भरत ने अयोध्या पहुंचकर सिंहासन पर राम की चरण पादुकाओं को प्रतिष्ठित कर दिया और परिवार का उत्तरदायित्व शत्रुघ्न को सौंप दिया और स्वयं राम की तरह तपस्वियों का बाना धारण कर लिया। भरत ने यह प्रण लिया कि राम वापस जब तक अयोध्या में नहीं आएंगे तब तक वे इसी प्रकार रहेंगे।

वनवास

भरत से मिलने के बाद राम उदास हो गए। उनकी यादों ने उन्हें ऐसा घेरा कि चित्रकूट में उनका रहना दूभर हो गया। उन्होंने चित्रकूट से अपना डेरा उठाया और लक्ष्मण एवं सीता के साथ महावन में प्रवेश कर गए।

दंडकारण्य पहुंचते हुए वहां विराज राक्षस का वध किया। इस प्रकार अपनी इस वनवास यात्रा के दौरान उन्होंने कई राक्षसों का वध किया एवं ऋषि-मुनियों को उनके आतंक से बचाया। इस तरह राम को वनवास भोगते हुए लगभग 10 साल हो चुके थे। हरी भरी राहों से होते हुए राम, सीता और लक्ष्मण पंचवटी की ओर चल दिए। लेकिन अचानक रास्ते में उन्हें एक विशाल पक्षी दिखाई दिया। तब पक्षी ने हाथ जोड़कर कहा।

जब से सुना है आप दंडकारण्य पधारे हैं। तब से आपके दर्शनों के लिए भटक रहा हूं। मैं जटायु हूं राम, तुम्हारे पिता का मित्र सो मुझे भी अपना ही मित्र मानो और मुझे भी अपने साथ रहने की अनुमति दो। मैं तुम्हारी मदद करूंगा।

राम ने जटायु की याचना स्वीकार ली और पंचवटी की राह पकड़ ली पंचवटी सचमुच बहुत ही रमणीक स्थल था। राम को यह स्थान बहुत भाया लक्ष्मण ने यहां बहुत अच्छी सी कुटिया बना डाली और तीनों ने हवन कर कुटिया में प्रवेश किया। अब पंचवटी में स्थिति यही कुटिया उन तीनों का घर थी लक्ष्मण बड़े भाई व भाभी की तन मन से सेवा करने लगे।

हेमंत ऋतु थी एक दिन दोनों भाई गोदावरी नदी से नहा कर वापस लौटे। तभी आश्रम के पास एक राक्षसी आ पहुंची। यह राक्षस राज रावण की बहन सूर्पनखा थी। जैसे ही उसने राम को देखा वह उसके रूप पर मोहित हो गई और राम के समक्ष विवाह प्रस्ताव रखा और राम द्वारा मना करने पर अपना विकराल रूप धारण कर सीता की ओर लपकी। भला यह लक्ष्मण कैसे बर्दाश्त करते राम का आदेश पाते ही उन्होंने तलवार निकाली और शूर्पणखा की नाक कान काट दिए।

सूर्पनखा पीड़ा के मारे झटपटाती हुई वहां से भाग निकली और अपने भाई खर के पास पहुंची। खर को यह बिल्कुल नहीं भाया और स्वयं रथ पर सवार होकर राम से लोहा लेने चल दिया और साथ में भाई दूषण और राक्षस सेना को भी लेता गया। आश्रम के निकट पहुंचते ही खर व उसकी सेना राम बाण छोड़ने लगे। तब राम को क्रोध आया और उन्होंने ताबड़तोड़ बाण छोड़ना शुरू कर दिया देखते ही देखते अनगिनत राक्षस जमीन पर आ पड़े और पलक झपकते ही सारा क्षेत्र राक्षसों की लाशों से पट गया। इस प्रकार इस भयंकर युद्ध में राम ने दूषण के दोनों हाथ काट दिए और अंत में सिर्फ खर बचा जिसे भी राम ने अगस्त मुनि द्वारा प्राप्त अस्त्र से मार डाला।

इस युद्ध में अकंपन नामक राक्षस बच गया जो सीधा लंका नरेश रावण के पास पहुंचकर उन्हें सारा वृत्तांत कह सुनाया और राम की वीरता एवं शक्ति की तारीफ की। ऐसे में रावण के क्रोध का ठिकाना नहीं रहा। तब अकंपन ने रावण को एक उपाय सुझाया उसने कहा।

राम की पत्नी सीता अत्यंत रूपवती है और राम उसे बहुत चाहते हैं। अगर आप सीता को हर लाए तो राम उसके वियोग में घुट घुट कर मर जाएगा और आपको जहमत उठाने की जरूरत भी नहीं पड़ेगी।

यह उपाय रावण को भा गया और वह अपने दिव्य रथ पर सवार होकर आकाश मार्ग से सागर पार कर मारीच राक्षस के पास जा पहुंचा। यह वही मारीच था जिसे राम ने कभी विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करते समय ऐसा तीर मारा था कि वह आघात होकर यहां आकर गिर गया था।

रावण मारीच को दंडकारण्य ले गया और एक उपाय सुझाया। मारीच ने रावण के कहे अनुसार स्वर्ण मृग का रूप धरा और राम के आश्रम के पास जा पहुंचा। जब सीता की नजर उस पर पड़ी तो वह उस पर मोहित हो गई। उसने राम से कहा।

स्वामी देखो कितना प्यारा मृग है। मैं इसे पालना चाहती हूं आप इसे पकड़ कर लाइए। इसे हम बाद में महलों में ले चलेंगे और अगर यह जीवित न पकड़ा जाए तो इसे मार कर इसकी छाला ही ले आइए।

पहले तो राम ने सीता को समझाया पर सीता स्वर्ण मार्ग पाने को कटिबद्ध थी तब राम लक्ष्मण से बोले।

मैं यह मृग पकड़ने जा रहा हूं। हो सकता है यह किसी राक्षस द्वारा हमें फंसाने की चाल हो अगर यह मायावी हुआ तो मारा जाएगा परंतु पीछे से तुम यहां रहकर सीता की रक्षा करना।

ऐसा कहकर राम वहां से निकल चले। मायावी मृग कूदता फांदता हुआ भाग रहा था कभी नजर आता तो फिर कभी लुप्त हो जाता। अंत में राम ने उस पर तीर छोड़ दिया जो मृग की छाती पर जा लगा। बाण लगते ही वह असली रूप में आ गया और झटपटाता हुआ मारीच जोर से हे लक्ष्मण, हे सीते पुकार कर मर गया। राम देखते ही समझ गए और कि यह राक्षसों की चाल है और दोबारा कुटिया की ओर दौड़े। इधर हे

लक्ष्मण, हे सीते सुनते ही सीता ने सोचा कि राम संकट में फंस गए हैं तो उन्होंने लक्ष्मण को शीघ्र भाई की सहायता करने के लिए भेजा। लक्ष्मण ने पहले तो सीता को समझाया कि हो सकता है यह किसी राक्षस की चाल हो परंतु सीता के अधिक कहने पर लक्ष्मण ने अपना धनुष बाण संभाला और कुटिया से चल दिए।

लेकिन जाने से पहले लक्ष्मण ने कुटिया के चारों और तीर से सीमा रेखा अंकित कर दी और सीता से कहा कि इस रेखा से बाहर बाहर ना निकले अन्यथा अनर्थ हो जाएगा। रावण पास ही छिपा हुआ यह सब देख रहा था। लक्ष्मण के आश्रम से दूर जाते ही उसने एक साधु का वेश धारण किया किंतु लक्ष्मण की सीमा रेखा पार नहीं कर सका। तो उसने दूर से ही आश्रम के पास पहुंचकर गुहार लगाई। इस पर सीता बाहर आई और उसने सोचा कि साधु से कैसा डर। वह भिक्षा देने के लिए सीमा रेखा से बाहर निकल आई और बाहर आते ही रावण वास्तविक रूप में प्रकट हो गया। यह देखकर सीता घबरा गई और पूछा।

तुम कौन हो।

रावण बोला, मैं लंकापति रावण हूं।

और वह जोर-जोर से हंसते हुए उसने सीता को उठा लिया और अपने रथ पर उसे बिठाकर आकाश मार्ग से लंका की ओर उड़ चला। रावण अट्टहास करता हुआ जा रहा था। वह सीता से बोला।

मैं त्रिलोक राजा हूं, किंतु तुम्हारे रूप के सामने मैं सब कुछ हार चुका हूं। तुम मेरी समस्त रानियों में सर्वोत्तम हो। तुम्हें मैं महारानी बनाऊंगा, तुम्हारी असंख्य दासिया

होंगी और तुम वहां राज करोगी। सीता ने रावण से अपने आप को छुड़ाने की बहुत कोशिश की परंतु कोई फायदा नहीं हुआ।

रावण जोर-जोर से हंसता हुआ जा रहा था। तभी जटायु ने रावण को सीता का हरण करते हुए देखा तो वह क्रोधित हो गया और सीता को बचाने रावण के पास जा पहुंचा। जटायु का बीच में कूदना रावण को भाया नहीं और रावण और जटायु में आकाश में घमासान युद्ध छिड़ गया। परंतु जटायु बूढ़ा और अशक्त था रावण ने तीव्र प्रहार कर उसके पंख काट दिए और वह तड़पता हुआ जमीन पर आ गिरा। बस उसकी सांसें बची हुई थी। रावण का विमान लंका की ओर उड़े जा रहा था।

इस प्रकार रावण वन, प्रांत, नदी- नालों, पर्वतों और सागर को पार करता हुआ लंका जा पहुंचा और सीता को अपने महल में ले गया। सीता सो रही थी तब रावण पास आकर बोला।

रोती क्यों हो सीता मेरा सब कुछ तुम्हारा है। यह राजपाट, धन दौलत, दास दासियां सब तुम पर न्योछावर है। पटरानी बनकर तुम लंका पर शासन करो। तुम्हें यहां कोई कष्ट नहीं होगा।

सीता बोली। नीच रावण, सत्यवादी और पराक्रमी राम ही मेरे आराध्य हैं। मैं किसी पर पुरुष की छाया भी अपने ऊपर नहीं पड़ने दूंगी। तुझे इसकी सजा जरूर मिलेगी तेरी भी वही दशा होगी जो खर और दूषण की हुई।

रावण को क्रोध आया है बोला, मैं चाहूं तो तुम्हें जोर-जबर्दस्ती से भी हासिल कर सकता हूं किंतु मैं तुम्हें एक वर्ष देता हूं। अगर तुमने मुझे स्वीकार नहीं किया तो मैं तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगा।

इतना कहकर रावण ने राक्षसियों से कहा कि इसे अशोक वाटिका में ले जाओ। सभी राक्षसियां सीता को अशोक वाटिका में ले गई।

इधर मारीच का वध करके राम कुटिया की ओर आए। रास्ते में लक्ष्मण से मिले तो लक्ष्मण ने उन्हें सारा मामला समझाया। दोनों जैसे ही कुटिया पहुंचे तो कुटिया खाली थी। सीता का दूर-दूर तक पता नहीं था। राम की आंखों के आगे अंधेरा छा गया वे घबरा गए उन्हें कुछ समझ नहीं आया कि पल भर में सीता कहां लापता हो गई। लक्ष्मण भी परेशान हो उठे। उन्होंने चारों ओर नजर दौड़ाई और सीता को आवाज लगाई परंतु कहीं भी सीता का नामोनिशान नहीं था। राम की आंखें नम हो गई और वे परेशान हो गए तब लक्ष्मण ने उन्हें सांत्वना दी और सीता को खोजने का सुझाव दिया।

मार्ग में खोजते खोजते उन्हें जटायु मिल गया जोकि राम की प्रतीक्षा कर रहा था उसने बताया कि रावण सीता का हरण कर ले गया है। वह बोला

मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था राम, लंकापति रावण जानकी को हर ले गए हैं मैंने उन्हें छुड़ाने का बहुत प्रयास किया किंतु मुकाबला नहीं कर सका। मैं कुछ ही पलों का मेहमान हूं ऐसा कहकर जटायु ने दम तोड़ दिया। राम ने वीर जटायु का अभिवादन कर यथाविधि अंतिम संस्कार किया और लंका की ओर दक्षिण दिशा की ओर चल पड़े।

खोजते खोजते वे दोनों वन में काफी आगे दूर दक्षिण दिशा की ओर निकल आए चारों ओर अंधकार था तभी एक बहुत ही भयानक राक्षस ने दोनों भाई को पंजों में दबा लिया। राम ने तलवार से एक ही बार में उसके दोनों हाथ काट डाले और वह तड़पता हुआ जमीन पर आ पड़ा। मरते मरते राक्षस बोला

हे राम, मैं कबंध हूं। मैंने बहुत पाप किए थे। आज मैं तुम्हारे हाथों से पाप मुक्त हो गया हूं। मैं तुम्हें सीता का उद्धार का उपाय बताता हूं। तुम यहां से सीधा ऋश्यमूक पर्वत चले जाओ वहां पंपापुर नामक नगर है वहीं वानर राज सुग्रीव अपने बहादुर वानरों के साथ रहते हैं। उनकी सेना रावण की सेना से भिड़ने में पूरी तरह समर्थ है। सुग्रीव को उसके भाई बालि ने उसका राज्य हड़प कर उसे घर से भगा दिया है वह भी तुम्हारे जैसे मित्र की तलाश में है। तुम उनकी सहायता करो वह तुम्हारी करेगा। राम ने लक्ष्मण के साथ पंपापुर की राह पकड़ी।

किष्किंधा

ऋश्यमूक पर्वत पर सुग्रीव अपने बचे कुचे वीर मंत्री वानरों व परमवीर मंत्री प्रमुख हनुमान के साथ रहते थे। बालि ने उसकी बीवी और राज्य छीन कर घर से निकाल दिया था अब सुग्रीव को डर था कि कहीं वह मौका पाकर उसकी जान भी न लेले। उस दिन सुग्रीव ने देखा कि दो परम तेजस्वी बलिष्ट धनुर्धारी इधर ही चले आ रहे हैं। उसे शक हुआ कि कहीं बालि ने ही तो इन्हें मुझे मारने नहीं भेजा। तब उसने हनुमान को उनके पास भेजा।

सुग्रीव के आदेश से हनुमान ब्राह्मण भिक्षुक के रूप में पर्वत से नीचे उतर आए और राम के पास पहुंचकर विनीत भाव से बोले।

हे राजन आप लोग कौन हैं, हमारी पृथ्वी आपके चरणों से पवित्र हुई। मैं सुग्रीव का दूत हूं जो इस क्षेत्र के स्वामी हैं। उन्होंने आपका परिचय जानना चाहा है। मेरा नाम हनुमान है सुग्रीव अपने भाई से सताया हुआ है और भागकर यहां आश्रय लिया है। वह आपकी मित्रता चाहता है।

लक्ष्मण ने हनुमान को बताया। हे हनुमान सुग्रीव के गुणों से भला कौन परिचित नहीं। हम उसी से मिलने आए हैं हम चक्रवर्ती नरेश राजा दशरथ के पुत्र हैं। यह श्रीराम और मैं इनका अनुज लक्ष्मण। हम चौदह वर्ष का वनवास भोगते हुए भटक रहे हैं। हमारे साथ रामप्रिय सीता भी थी किंतु उन्हें रावण हर ले गया। हमें सुग्रीव की मित्रता स्वीकार है।

हनुमान दंग रह गए। श्रीराम के दर्शन पाकर उनकी आंखें नम हो गई। वे प्रसन्नता से फूले न समाए। क्योंकि वह श्रीराम का काफी वर्षों से इंतजार कर रहे थे वे उनके परम भक्त थे। उन्हें देखकर वे राम के चरणों में बैठ गए और बोले।

आप लोगों के दर्शन पाकर हम कृतकृत्य हुए प्रभु।

और इतना कहकर हनुमान राम लक्ष्मण को साथ लेकर ऋश्यमूक पर्वत की ओर चल पड़े। यहां आकर राम एवं सुग्रीव की आपस में मुलाकात हुई और दोनों ने ही अपनी दु:खद कहानी एक दूसरे को सुनाई। दोनों ने एक दूसरे की सहायता करने का वचन लिया।

इसके बाद राम ने सुग्रीव को बालि को हराने की एक योजना बताई और राम के साथ सभी किष्किंधा की ओर चल पड़े। किष्किंधा के पास ही वे एक ऐसे स्थल पर पहुंचे जहां वृक्षों के झुंड थे राम सभी के साथ वृक्षों की ओट में छिप गए और सुग्रीव के गले में उन्होंने एक माला डाल दी ताकि वह पहचान सके कि सुग्रीव कौन है और बालि कौन। सुग्रीव ने बालि को युद्ध के लिए ललकारा और दोनों एक दूसरे से टकरा गए। राम ने देर करना उचित नहीं समझा और धनुष उठाया और तीर छोड़ दिया जो बाली के वक्षस्थल में जाकर लगा। बालि धरती पर गिरकर अचेत हो गया और उसने दम तोड़ दिया।

सभी को बालि की मृत्यु का अत्यंत दुख हुआ। सुग्रीव की आंखें भर आई और बालि की पत्नी तारा भी विलाप करने लगी। इसके बाद बालि का विधिवत सम्मान पूर्वक अंतिम संस्कार किया गया और सुग्रीव को किष्किंधापुरी का सह सम्मान राजा बनाया गया और बालि के पुत्र अंगद को युवराज।

वीर हनुमान

सीता की याद बार-बार राम को घेरकर व्याकुल कर देती थी। ऐसे में लक्ष्मण राम को सांत्वना दिया करते थे हनुमान राम के वियोग से पीड़ित थे राम का कष्ट उनसे देखा नहीं जाता था राम के प्रति उनके हृदय में असीम श्रद्धा व अपनत्व था।

वर्षा ऋतु खत्म हो गई। हनुमान ने सुग्रीव के पास जाकर उसे अपने कर्तव्य एवं वचन की याद दिलाई। सुग्रीव ने भी हनुमान को यह विश्वास दिलाया कि वह अपने वचन को भूला नहीं है। तब सुग्रीव ने अपनी पूरी सेना के साथ राम के द्वार पर जाने का निश्चय लिया। राम के पास पहुंचकर सुग्रीव ने हाथ जोड़कर विनती की।

हे प्रभु मैं सारी तैयारियां करके आया हूं अब सीता माता की खोज का काम शुरू होने में विलंब हम बिल्कुल नहीं करेंगे।

राम आगे बढ़े और सुग्रीव को आलिंगन में लिया और धन्यवाद दिया।

राम ने हनुमान की ओर देखते हुए कहा।

हे पवनपुत्र तुम्हारे तो हर जगह पहुंच है तुम्हारे जैसा पर क्रम पराक्रमी दूसरा कोई नहीं। मुझे तुम पर पूरा भरोसा है मैं जानता हूं तुम सीता की खबर अवश्य लाओगे।

राम को हनुमान की योग्यता पर पूरा भरोसा था। राम ने एक अंगूठी हनुमान को देते हुए कहा।

सुनो कपीस, यह अंगूठी में मेरा नाम अंकित है अगर तुम्हें कहीं सीता मिल जाए तो उसे पहचान के लिए अंगूठी दे देना ताकि उसे तुम पर कोई शक ना हो।

हनुमान ने अंगूठे ली और श्रीराम के चरण छूकर व सुग्रीव से विदा लेकर सीता की खोज में वहां से प्रस्थान कर गए।

पूरी वानर सेना सीता के अनुसंधान में जुट गई। विश्वास था कि अवश्य ही सीता को खोज लिया जाएगा किंतु सीता अभी तक किसी को भी नहीं मिल पाई। सभी दक्षिणावर्ती समुद्र तट पर आ पहुंचे। अब तक का सारा प्रयास व्यर्थ गया था।

तभी सभी की नजर एक बूढ़े गिद्ध की ओर गई जो वही रहता था। वह बोला

हे वानरों, मैंने तुम्हारे मुख से रावण का नाम सुना। रावण ने बड़ी निर्ममता से मेरे भाई जटायु को मार डाला था और मैं अपने भाई की मौत का बदला लेना चाहता था किंतु बहुत बूढ़ा होने के कारण मैं रावण से लड़ने में असमर्थ हूं। मैं तुम्हारी मदद अवश्य करूंगा। सुनो रावण इसी मार्ग से एक रूपवती नारी को हर ले गया था जो बार-बार बड़ी करुणा से हे राम हे लक्ष्मण पुकार रही थी। नि:संदेह वे माता सीता ही होंगी और वह कहीं और नहीं लंका में ही है जो यहां से चार सौ कोस दूर समुद्र के पास स्थित है। वहीं राक्षसराज रावण का राज्य है बस किसी तरह समुद्र को पार कर सीता का पता लगाया जा सकता है।

यह सुन सभी बहुत प्रसन्न हुए सीता का तब तक पता चल चुका था। किंतु दूर-दूर तक फैले इस विशाल असीम सागर को कैसे बाहर किया जाए यही एक सवाल था। इस सागर को पार करने की हिम्मत पूरी वानर सेना में किसी की नहीं हो पा रही थी। तब हनुमान ने सागर पार करने की ठानी और देखते ही देखते हनुमान का आकार

वृहद हो गया और वे एक विशाल रूप में आ गए और सागर के किनारे जा पहुंचे। हनुमान बोले

बंधुओं, मैं यह एक समुद्र तो क्या ऐसे अनंत समुद्रों को लांग सकता हूं और श्रीराम के लिए तो मैं कुछ भी कर सकता हूं। तुम चिंता मत करो मैं सीता माता को खोजकर ही दम लूंगा और रावण को ऐसा मजा चखाऊंगा कि वह जिंदगी भर याद रखेगा।

हनुमान विदा लेकर एक भव्य उछाल भरी और समुद्र के ऊपर से उड़ चले। उन्हें दूर अनेक नदियां तट से गिरती हुई समुद्र में दिखाई दी, जहां पर घने वृक्षों की कतारें फैली हुई थी। हनुमान समझ गए कि यहीं लंका है जहां सोने के महल हैं। हनुमान तट के किनारे नीचे उतरे और एक शिखर पर चढ़कर उन्होंने सोने की लंका को देखा जो सचमुच इंद्रपुरी के समान सुशोभित थी। परंतु अभी उन्हें यह नहीं पता था कि सीता माता को कहां ढूंढ़ा जाए। हनुमान जानते थे कि सहज मार्ग से नगर में प्रवेश करना मुश्किल है और वे भी नहीं चाहते थे कि किसी भी राक्षस को उनके आगमन का जरा भी संदेह हो।

तब उन्होंने चालाकी से अपना आकार छोटा कर लिया और सीधा लंका की दीवार फांद कर नगर में प्रवेश किया। हनुमान सीता की खोज में इधर-उधर भटकने लगे, अनेक बाग बगीचों में सीता को ढूंढ़ा किंतु सीता कहीं नजर नहीं आई। आखिरकार हनुमान की तपस्या रंग लाई और खोजते खोजते अशोक वाटिका में दाखिल हो गए। वाटिका बहुत ही सुंदर थी। चारों और वृक्षों की कतारें थी, नाना प्रकार के पक्षियों से वाटिका गुंजन हो रही थी। रंग-बिरंगे फूलों की महक आ रही थी।

यहीं पर सीता कैद थी। हनुमान ने चारों ओर नजर घुमाई और अंत में उन्हें एक वृक्ष के नीचे चबूतरे पर उदास व मलिन एक स्त्री देखी। जिसके चारों और राक्षसियां

मुस्तैदी से खड़ी थी। ऐसा लग रहा था कि उसने कई दिनों से अन्न का एक दाना भी मुंह में नहीं डाला है। चेहरे पर चिंता की गहरी रेखाएं थी। वह इस सुंदर अशोक वाटिका में जरा भी खुश नहीं थी। हनुमान ने सोचा नि:संदेह यह सीता ही हो सकती हैं और कोई नहीं। इतनी सुंदर और शोकाकुल नारी का इस रमणीक स्थान में सीता के अलावा और कौन हो सकता है।

अनजाने में हनुमान की आंखों से आंसुओं की धारा टप टप गिरने लगी। सीता माता की यह स्थिति हनुमान से देखी नहीं जा रही थी। मौका देखकर हनुमान नीचे झुके और वृक्ष के पास आकर सीता को संबोधित करके मृदु स्वर में राम और उनके वंश का गुणगान करते हुए बोले।

हे सीता माता। मैं राम का दूत हूं वे आपको खोजते खोजते वानर राज सुग्रीव के पास पहुंचे हैं। हम उन्हीं की आज्ञा से आपको खोजते फिर रहे थे तब मुझे जटायु के भाई ने आपका पता दिया। मैं अथाह समुद्र को लांघते हुए लंकापुरी पहुंचा हूं।

इस विकट स्थान में राक्षसियों के पीड़ादायक सख्त पहरे में रावण के आतंक को सहते हुए सीता ने जब ये वचन सुने तो लगा जैसे कानों में अमृत घुल गया हो। सीता को वृक्ष पर बैठे हनुमान दिखाई दिए। सीता बोली

तुम्हारा संदेश सही है वानर। मैं राम की सीता ही हूं और रावण मुझे यहां जबरदस्ती उठा लाया है। पर तुम कौन हो, कहीं तुम कोई मायावी तो नहीं। क्योंकि इससे पहले भी मायावी मृग द्वारा मुझे धोखा मिल चुका है।

हनुमान बोले, हे माता मुझ पर तनिक भी संदेह न करें मैं नि:संदेह राम का दूत ही हूं। मेरा नाम हनुमान है।

सीता को विश्वास दिलाने के लिए हनुमान ने वह अंगूठी सीता को दिखाते हुए कहा

हे माता यह देखिए मुद्रिका इस पर श्रीराम का नाम अंकित है। चलते समय राम ने ही मुझे यह दी थी ताकि आपको दिखाकर विश्वास दिला सकूं कि मैं राम का ही दूत हूं।

सीता ने अंगूठी क्या देखी साक्षात राम के दर्शन कर लिए और हर्ष और आनंद से सीता के हृदय का मयूर नाच उठा। पल भर में ही सीता के चेहरे से मायूसी की छाया दूर हो गई अब उन्हें हनुमान पर कोई संदेह नहीं रहा।

हे पवनपुत्र, अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि तुम्हे राम ने ही मेरे पास भेजा है।

हनुमान बोले, आपके दुख से मेरा हृदय फटा जा रहा है माता, अगर आप आदेश दें तो मैं स्वयं अकेले ही आपको इस कैद से मुक्त कर सकता हूं। आपको पीठ पर बिठाकर इसी समय सागर पार करके श्रीराम के पास पहुंचा सकता हूं। ये राक्षस मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगे।

तब सीता बोली, मैं जानती हूं कि तुममें इतनी शक्ति है पवन पुत्र, कि तुम मुझे यहां से ले जा सकते हो। परंतु मेरे लिए तुम्हारी पीठ पर सवार होना उचित नहीं। मैं श्री राम के अलावा किसी पर पुरुष को स्पर्श भी नहीं कर सकती। मैं तो यहां से तभी मुक्त होना चाहूंगी जब स्वयं राम रावण का वध कर मुझे यहां से ले जाएंगे।

तब सीता ने अपनी चूड़ामणि हनुमान को सौंपते हुए बोली।

यह लो पवन पुत्र, यह मेरी निशानी राम को दे देना। इसे देखकर राम तुरंत समझ जाएंगे कि तुम मुझसे मिल चुके हो। उनसे कहना कि सीता के अपमान का बदला जल्दी आ कर ले।

हनुमान बोले ऐसा ही होगा माता। फिर हनुमान विदा हुए।

लंका से निकलने से पहले हनुमान ने सोचा जरा लंका की सामरिक स्थिति भी समझ लेनी चाहिए और रावण की सेना एवं उनके अस्त्र-शस्त्र के भंडार के बारे में भी जानकारी ले लेनी चाहिए। फिर क्या, हनुमान ने अशोक वाटिका में तहस-नहस करना शुरू किया। अशोक वाटिका के बड़े बड़े पेड़ों को झकझोर कर भूमिसाध कर दिया। रंग बिरंगे फूलों के समस्त पौधों को उखाड़ फेंका और जानबूझकर वाटिका के मुख्य द्वार पर खड़े हो गए ताकि रावण के राक्षस उन्हें गिरफ्तार करने आए।

तभी बहुत से राक्षस आकर रावण हनुमान की ओर लपक पड़े हनुमान ने एक-एक कर सभी को मौत के घाट उतार दिया पहले हनुमान जम्बुमाली को मारा और इसके बाद रावण पुत्र अक्षय कुमार का भी वध कर दिया। तब जाकर मेघनाथ ने ब्रह्मास्त्र से हनुमान को बांध लिया और रावण के समक्ष प्रस्तुत किया।

रावण का व्यक्तित्व देख हनुमान भी बहुत प्रभावित हुए। सुगठित देह, विशाल स्कंध, बड़ी बड़ी तीखी आंखें, भव्य चेहरा इतना बलशाली आकर्षक राजा लेकिन फिर भी इतना क्रूर एवं अन्यायी हो सकता है हनुमान को यह विश्वास नहीं हुआ। रावण गरज कर बोला।

अरे वानर तू कौन है किसने भेजा है तुझे और अशोक वाटिका में तूने सीता से क्या बातें की।

लंकेश मैं किष्किंधा के राजा सुग्रीव का दूत हूं और श्रीराम का भक्त हनुमान। आप इतने विद्वान और नीतिवान हैं उसके बाद भी आपने पर नारी का अपहरण करके उचित नहीं किया ऐसा करके आपने अपनी मौत स्वयं आमंत्रित की है। अभी भी उचित

समय है आप सीता से क्षमा मांग कर उन्हें मुक्त कर दे। राम का हृदय विशाल है वह आपको क्षमा कर देंगे नहीं तो आपकी भी वही दशा होगी जो खर व दूषण आदि की हो चुकी है।

रावण को क्रोध के मारे थरथर कांप उठा और उसने राक्षकों को हनुमान के शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके फेंक देने का आदेश दिया। तभी वहां दरबार में विभीषण बैठा था जो रावण का छोटा भाई था। वह अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति का नीतिवान दयालु राम भक्त था। वह रावण से विनीत स्वर में बोला।

हे राजन, इस वानर ने पहले ही बता दिया है कि वह राजा सुग्रीव का दूत है अत: दूत को मारना राजनीति के नियम अनुसार अधर्म है इससे आपकी चारों ओर बदनामी होगी।

रावण ने सोचा फिर बोला, ठीक है विभीषण, मैं इसकी जान नहीं लूंगा लेकिन इसके किए की सजा अवश्य दूंगा। इस वानर की पूंछ में आग लगा दो जब यह जली हुई पूछ लेकर किष्किंधा पहुंचेगा तो इसका खूब मजाक उड़ेगा और यह आजीवन अपने इस कुकृत्य को याद कर पछताएगा।

आदेश सुनते ही सैनिकों ने हनुमान की पूंछ पकड़ी और उस पर तेल लगाकर आग जला दी। हनुमान पर इसका कोई फर्क नहीं पड़ा बल्कि उन्होंने इसका फायदा उठाकर जलती हुई पूंछ को हवा में लहरा कर सैनिकों पर कड़े प्रहार किए और कई राक्षस मारे गए। जो लोग हंस रहे थे उन सभी में आतंक फैल गया। इतने में भी हनुमान को संतोष नहीं हुआ उन्होंने अब लंका को जलाना आरंभ किया और लंका धू-धू कर जलने लगी। इसके बाद हनुमान सीता माता के पास अशोक वाटिका पहुंचे और उन्होंने हाथ जोड़कर उनसे जाने की आज्ञा मांगी और हनुमान लंका से प्रस्थान करने करते

हुए बाहर निकल गए और सागर पार करते समय उन्होंने अपनी पूंछ की आग बुझा ली।

सागर पार कर तट पर जैसे ही सभी को यह पता चला कि सीता माता मिल गई है सभी ने हनुमान को फूल मालाओं से उनका स्वागत किया और किष्किंधा पुरी की ओर प्रस्थान किया। वहां पहुंचकर हनुमान ने सारा वृत्तांत सुनाया एवं राम को सीता की चूड़ामणि दी। राम सीता की दुर्दशा सुनकर कराह उठे उनकी आंखों से आंसू की बूंदें छलक पड़ी। वे एक टक सीता की चूड़ामणि को निहारते रहे। वह बोले

हे सुग्रीव सीता की चूड़ामणि देखकर मेरा हृदय रो रहा है यह वही मणि है जो राजा जनक ने विवाह के अवसर पर सीता को दी थी। तुम यथाशीघ्र अपनी तैयारियां शुरू करो हमें लंका कि और प्रस्थान करना है। मैं सारी लंका को धूमिल कर दूंगा।

लंका विध्वंस

लंका पर आक्रमण करने की तैयारियां शुरू हो चुकी थी। समस्त वीर वानर अपनी-अपनी गुफाओं से बाहर युद्ध में हिस्सा लेने आ चुके थे। एक दिन वानर सेना राम सहित सागर तट पर आ पहुंचे। परंतु अब समस्या यह थी कि सागर को कैसे पार किया जाए।

इधर लंका में रावण के क्रोध का अंत नहीं था। एक बंदर उनकी उसकी लंका को आग के हवाले करके भाग चुका था। यह बात रावण बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। उसने दरबार में अपने सभी प्रमुख मंत्रियों के सैन्य अधिकारियों को बुलवाया और कहा।

हमें किसी भी प्रकार से अपमान का बदला लेना है यह सब उस राम के कारण ही हुआ है और इस बार यदि कोई भी वानर या अन्य कोई इस लंका में प्रवेश करें उसे मौत के घाट उतार दो और मुझे यह बताओ कि किस प्रकार में सीता से विवाह करूं और उस राम को मजा चखाऊं। तब विभीषण रावण के आगे हाथ जोड़कर बोला।

हे लंकेश मैं तो कहूंगा जो कुछ करें सोच समझ कर करें एक ही वानर ने लंका की जो दुर्गति बना दी उससे हमें सबक हासिल करना चाहिए। सीता को वापस भेज दीजिए वरना राम की सेना लंका को तहस-नहस कर देगी। आप सीता को सम्मान पूर्वक यहां से राम को लौटा दीजिए राजन इसी में हमारी, आपकी और लंका वासियों की भलाई है। राम के शौर्य को कौन नहीं जानता है लंकेश। इन दरबारियों की बात मत सुनो राम से माफी मांग लो और सीता को सौंप दो।

इस पर मेघनाद कसमसाया वह भी अपने पिता रावण की भांति दंभी था। उसने उपेक्षा से कहा।

आप जैसा कायर हमारे कुल में कोई पैदा नहीं हुआ हम राम से अवश्य टक्कर लेंगे।

विभीषण की बातें सुनकर रावण का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा और उसने सभी के सामने विभीषण का अपमान किया और उसे लंका से निकल जाने का आदेश दिया। अपमान से विभीषण का चेहरा रक्त वर्ण हो गया। वह अपने आसन से उठा और अपने चार मंत्रियों सहित दरबार से बाहर निकल गया। अंततः वह सागर पार कर सीधे वहां पहुंचा जहां राम अपनी सेना सहित डेरा डाले हुए थे।

यहां विभीषण राम से मिला और अपना परिचय दिया।

हे राम मेरा नाम विभीषण है और मैं लंका नरेश रावण का छोटा भाई हूं।

राम बोले तुम हमसे क्या चाहते हो विभीषण।

अधर्मियों का विनाश प्रभु। रावण ब्रह्मा से अमरता का वर पाकर दंभी हो गया है। मुझे रावण की शक्ति का पूरा ज्ञान है। रावण का भाई कुंभकरण, पुत्र मेघनाद, सेनापति व मंत्री आदि भी अत्यंत बलशाली है। मैं चाहता हूं कि आप उसका विनाश कर लंका को बचाएं और इस कार्य में जो कुछ हो सकेगा मैं आपकी सहायता अवश्य करूंगा।

राम ने बढ़कर प्रसन्नता से विभीषण को आलिंगन में लिया और उसे भरोसा दिलाते हुए कहा

तुम चिंता ना करो विभीषण रावण का सर्वनाश कर लंका को आजाद करेंगे एवं लंका के आगामी नरेश आपको बनाएंगे।

तब सभी ने विशाल सागर को पार करने की योजना बनाई। नल व नील ने वानर सेना के साथ पत्थरों पर श्रीराम का नाम लिखकर सागर पर डाला और देखते ही देखते कुछ ही दिनों में सौ योजन लंबा पुल बनकर तैयार हो गया। सुग्रीव की सेना राम के नेतृत्व में लंका की ओर अभिमुख हुई और सागर के पार पहुंच कर राम ने अपना शिविर डाल दिया।

रावण को गुप्त चारों ने इसकी सूचना दी तो रावण को अत्यंत क्रोध आया और वह चिंता में पड़ गया। तब उसने सोच विचार कर मायावी कारीगर से राम लक्ष्मण का मायावी कटा हुआ सिर बनवाया। जिसे रावण सीता को बहलाने के लिए अपने साथ ले गया और सीता से जाकर कहा।

यह देखो रक्तरंजित सर मैंने राम को युद्ध में हराकर उसे और लक्ष्मण को मार दिया है इसे देखकर तुम कह सकती हो कि अब तुम्हारा राम अब इस दुनिया में नहीं रहा। अब मेरी बात मानो और जल्दी से मेरी बन जाओ।

कटे हुए सिर देखकर सीता का रो रो कर बुरा हाल हो गया। रावण को लगा अब तो उसका यह काम हो जाएगा और सीता शोक में मूर्छित हो गई और रावण वहां से चला गया। तभी रावण के जाते ही सीता के पास रखे राम लक्ष्मण के रक्त रंजित मस्तक एकाएक विलुप्त हो गए विभीषण की पत्नी से सीता का दुख देखा नहीं गया। रावण के जाते ही वह सीता के पास आई और उससे बोली हे जनक दुलारी होश में आओ रावण की बातों से दुखी होने की जरूरत नहीं। वह तो एक कपटी व धूर्त है। राम व लक्ष्मण के जो मस्तक उसने दिखाई वह मायावी थे देखिए अब गायब हो चुके हैं। सच तो यह

है कि रावण राम की शक्ति से भयभीत हो चुका है। अब वह दिन दूर नहीं जब रावण राम के हाथों मारा जाएगा। विभीषण की पत्नी की बातें सुनकर सीता की सारी चिंताएं जाती रही।

राम जानते थे कि इस युद्ध में लंका वासियों को भी काफी हानि होने वाली है इसलिए उन्होंने एक बार और प्रयत्न कर अंगद को रावण के दरबार में शांति दूत बनाकर भेजा। अंगद रावण के सामने जाकर बोला।

हे लंकेश मैं अंगद बालि का पुत्र हूं और तुम्हारे भले के लिए श्रीराम ने कहा है कि सीता को आज ही मुक्त कर दो वरना कल का सूरज उगते हैं तुम और तुम्हारा वंश यमलोक भेज दिए जाओगे। उन्होंने तुम्हें आखिरी मौका दिया है।

रावण भला यह क्यों सहने वाला था। उसने अपने राक्षसों को अंगद को गिरफ्तार करने का आदेश दिया परंतु कोई भी अंगद का पैर तक नहीं हिला सका। अंगद ने राक्षस सैनिकों को एक ही प्रहार में दूर कर दिया और स्वयं एक ऊंचे स्थान पर चढ़ बैठा जो रावण से सिंहासन से भी ऊंचा था। रावण के राक्षस सैनिकों में अंगद को बहुत पकड़ने की कोशिश की लेकिन वह हाथ नहीं आया और वहां से निकल राम के पास जा पहुंचा।

अंगद दरबार से निकला ही था कि गुप्त चारों ने रावण को आकर सूचना दी कि पूरी लंका को राम की वानर सेना ने घेर लिया है। अब क्या किया जाए रावण अंदर ही अंदर कांप उठा। किंतु चेहरे पर घबराहट जाहिर नहीं होने दी। राम से टक्कर लेने के अलावा अब कोई और चारा नहीं रह गया था। वानर सेना युद्ध के लिए तैयार हो चुकी थी राम ने भी बिना वक्त गवाएं सेना को लंका की चढ़ाई का आदेश दिया। फिर क्या था वानर वीरों ने पलक झपकते ही लंका के मुख्य द्वार को तोड़ डाला और अंदर

प्रवेश कर भव्य भवनों इमारतों को तोड़ने फोड़ने लगे। राक्षस सेना में कोलाहल मच गया और राक्षस सेना टक्कर लेने के लिए आगे बढ़ी।

थोड़ी ही देर में वानर सेना और राक्षस सेना एक दूसरे से टकरा गई। पल भर में सारी धरती लहूलुहान हो गई। वानर व राक्षस वीर गति को प्राप्त होने लगे। सागर का पानी खून से लाल हो गया।

राम के बाण से राक्षसों चुन चुन कर धराशाई होते जा रहे थे।परंतु रावण पुत्र इंद्रजीत ने धनुष से नागपाश छोड़ी जिससे राम व लक्ष्मण दोनों अचेत हो गए परंतु तभी आकाश से गरुड़ विनता का यान उतरा और उसने राम लक्ष्मण का स्पर्श किया। पलक झपकते ही वे होश में आ गए और वानर सेना का उत्साह दोबारा लौट आया।

नील द्वारा रावण के मंत्री व सेनापति प्रहस्त मारा गया जिससे राक्षस सेना में खलबली मच गई। प्रहस्त की मौत की सूचना से रावण चिंतित हो गया और ऐसे समय में उसने कुंभकरण की याद आई कुंभकरण शॉप ग्रस्त था और वह छह मास सोता था और छह माह जागता था। राक्षसों ने कुंभकरण को जगाने के लिए ढोल नगाड़े बजाए और खूब शोर शराबा मचाया तब जाकर कुंभकरण की आंखें खुली। कुंभकरण तैयार होकर रावण से मिला और रावण ने उसे युद्ध में राम एवं लक्ष्मण को कुचलने के लिए भेज दिया। हाथों में भयंकर शस्त्र लेकर व लोह कवच धारण कर कुंभकरण युद्ध भूमि में पहुंच गया और वानर सेना पर टूट पड़ा। वानर सेना वीरगति को प्राप्त होने लगी बहुत से वानर मारे गए। चारों और मारकाट मच गई।

राम के सब्र का बांध टूट चुका था। तब राम ने घातक बाणों से कुंभकरण पर प्रहार किया इससे कुंभकरण का विशाल लोह कवच टूट कर नीचे गिर गया। उन्होंने धनुष की प्रत्यंचा खींचकर कुंभकरण पर बाण छोड़ दिए आखिर कुंभकरण कब तक इतने

बाणों को झेल पाता। कुंभकरण का सर कट कर दूर जा गिरा और शरीर के भी अनेक टुकड़े हो गए। राक्षस सेना में उसकी मृत्यु से मातम छा गया और सभी जगह जय श्रीराम की जय-जयकार से गूंज उठा।

रावण को कुंभकरण पर बेहद भरोसा था उसकी मौत का समाचार सुनते ही वह शोक में डूब गया। तब रावण ने नए सिरे से युद्ध की तैयारी शुरू कर दी उसने अपने कुछ जीवित पुत्र पृथ्वीराज, देवांतक, नारांतक, अतिकाय आदि को युद्ध भूमि की ओर रवाना किया। रावण के यह सभी पुत्र मारे गए। इनके अलावा ढेर सारे राक्षस भी राम व लक्ष्मण के बाणों के आगे टिक नहीं सके। तब रावण को मेघनाद की याद आई। अब रावण को इसी पुत्र पर विजय की सारी आशाएं केंद्रित थी। मेघनाद ने उसी समय रथ सजाया और युद्ध भूमि की ओर दौड़ पड़ा।

राम ने लक्ष्मण को मेघनाद का वध करने के लिए युद्ध में भेज दिया साथ में विभीषण, हनुमान, जामवंत एवं वानर सेना भी गई। गुस्से से मेघनाद ने बाणों की वर्षा कर दी। वहीं लक्ष्मण ने भी निशाना लगाकर मेघनाद पर बाण छोड़े। तभी मेघनाद का एक तीव्र बाण लक्ष्मण को जा लगा और वे मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़े। राम को लक्ष्मण के मूर्छित होने का समाचार मिला तो वे विलाप करने लगे। लक्ष्मण को होश में लाने के अनेक प्रयास किए गए। तब हनुमान द्वारा लाए गए वैद्य ने संजीवनी बूटी लाने को कहा जिससे लक्ष्मण की जान बचाई जा सके। हनुमान संजीवनी बूटी लेने द्रोण पर्वत पर गए परंतु वहां अनेकों बूटियां थी तो उन्हें यह मालूम नहीं था कि संजीवनी बूटी कौन सी है। इसलिए हनुमान पूरा पर्वत उठाकर ही युद्ध भूमि में ले आए। वैद्य ने प्रात होने से पहले ही संजीवनी बूटी से लक्ष्मण को सचेत कर दिया और अगले ही दिन लक्ष्मण, मेघनाद से टक्कर लेने गए। लेकिन इस बार लक्ष्मण ने राम का नाम लेकर

एक अमोघ बाण मेघनाद पर छोड़ दिया। उस बाण से मेघनाद का सिर धड़ से अलग हो गया और वह मारा गया। मेघनाद के गिरते ही रावण की सेना भाग निकली।

मेघनाथ का मरना रावण के लिए बहुत बड़ा आघात था। एक बेटा बचा था वह भी मारा गया। अब वह उसकी मां मंदोदरी को कैसे सांत्वना दें। लंका में शोक छा गया। रावण ने बचे कुचे सैनिकों एवं सेनापतियों को बुलाया परंतु कोई फायदा नहीं हुआ। रावण की प्रशिक्षित सेना वानरों के गुरिल्ला युद्ध के सामने टिक नहीं पाई। रावण का क्रोध अपमान और शोक से बुरा हाल था उत्तेजना से उसका सारा शरीर कांप रहा था।

अंत में रावण ने तय किया कि उसे स्वयं ही राम से टक्कर लेने युद्धभूमि जाना होगा। उसने स्वर्ण रथ तैयार करने का आदेश दिया और रथ पर सवार होकर रणक्षेत्र में आ पहुंचा। उसके साथ अनेक बलशाली राक्षस वीर और राक्षस सेना थी। रावण से पहले मुकाबला करने लक्ष्मण और रावण ने बड़ी आसानी से लक्ष्मण के बाणों को नाकामयाब कर दिया और अपना ध्यान राम पर केंद्रित किया।

राम व रावण में घनघोर युद्ध छिड़ गया। रावण ने राम पर घातक वार छोड़ें जिनका राम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। दोनों ही युद्ध की कला में निपुण थे। एक दिन इंद्र ने अपना रथ राम के लिए भेजा और सारथी मातलि भी। राम ने देवेंद्र की भेंट स्वीकार की और रथ पर सवार होकर रावण से युद्ध रत हो गए। यह भीषण युद्ध बारह दिनों तक चला। कभी राम रावण पर भारी पड़ते तो कभी रावण राम पर। राम ने अपने बाणों से रावण के अनेकों बार दसों सिर धड़ से अलग किए किंतु राम का कोई अस्त्र रावण को नहीं मार पा रहा था।

उस समय विभीषण ने राम के पास आकर रावण की नाभि पर एक बार ब्रह्मास्त्र छोड़ने को कहा तब मातलि ने भी राम को ब्रह्मास्त्र का उपयोग करने की सलाह दी। राम ने

ब्रह्मास्त्र निकाला और मंत्रों के उच्चारण के साथ रावण पर छोड़ दिया। ब्रह्मास्त्र का वार अचूक था उस से बच निकलना रावण के लिए मुश्किल था। रावण के कुछ सोचने से पहले ही देखते ही देखते ब्रह्मास्त्र कवच को फोड़ कर रावण की नाभि में जा घुसा। रावण पल भर के लिए संज्ञाशून्य हो गया। उसके हथियार छूटकर जा गिरे वह लड़खड़ाता हुआ धरती पर आ गिरा। उसकी सांसें उखड़ने लगी और वह अंतिम सांसें गिनने लगा।

लंका में सन्नाटा छा गया। मंदोदरी ने तत्काल राक्षसों को साथ लिया और रोती हुई रणक्षेत्र में पहुंची। मंदोदरी के करुण विलाप से वहां खड़े लोगों का हृदय पसीजने लगा। राम नीतिवान थे। रावण के गिरते ही उन्होंने युद्ध स्थगित कर दिया। विभीषण भी अपने बड़े भाई की मृत्यु पर अत्यंत दुखी थे क्योंकि था तो वह रावण का भाई ही। राम ने आगे बढ़कर विभीषण को बांहों में लिया और उसके अश्रु पोंछे और कहा

रावण वीर था तो और उसने वीरता से युद्ध लड़ा। निश्चित है कि वह मरणोपरांत स्वर्ग में स्थान पाएगा।

रावण ने मरने से पहले विभीषण को राजनीति के अनेकों गुर समझाएं और उसके बाद अंतिम सांसें ली। अंत में समुद्र तट पर राक्षस राज रावण का विधिवत अंतिम संस्कार किया गया। इस प्रकार युद्ध का अंत हो गया। राम ने लंका का राज विभीषण को सौंप दिया। विभीषण का विधिवत राज्याभिषेक हुआ और रावण के बाद लंका के नए नरेश विभीषण बने।

मिलाप

राम वहीं ठहरे हुए थे जहां लंका प्रवेश के समय डेरा डाल रखा था। राम को सीता की चिंता थी सीता अभी तक अशोक वाटिका में ही थी। राम ने हनुमान से कहा

हे पवनसुत राजा विभीषण से आदेश लेकर अशोक वाटिका जाओ और सीता को समस्त समाचार सुनाओ।

हनुमान विभीषण से अनुमति लेकर सीता के पास पहुंचे सीता हनुमान को देखकर एवं विजय समाचार सुनकर खुशी से झूम उठी। सीता की आंखों से खुशी के आंसू झलक रहे थे सीता ने हनुमान से कहा कि राम से कहना कि मैं उनके दर्शनों के लिए तड़प रही हूं। सीता का यह संदेश लेकर हनुमान राम के पास वापस आए। हनुमान ने राम को सीता की सारी बातें बताई राम की आंखों के सामने परम प्रिय सीता का सलोना चेहरा उभर आया और फिर एकाएक न जाने क्या सोचकर विचार मग्न हो गए और उन्होंने हनुमान से कहा।

ठीक है, शीघ्र ही मैं उससे मिलूंगा। उनसे कहो नहा धोकर व नए वस्त्र आभूषण धारण करें फिर मेरे पास आए।

जब सीता को यह पता चला कि उन्हें पूर्ण वस्त्र व आभूषण धारण करके ही राम के सामने आना है उसे थोड़ा अटपटा लगा। पर वे इंकार कैसे करती। उन्होंने अच्छी तरह स्नान किया और नवीन वस्त्र पहने और भव्य आभूषणों से सजकर तैयार हो गई और एक पालकी में बैठाकर सीता को राम के सम्मुख लाया गया।

राम स्वयं उनकी प्रतीक्षा में थे। सीता आगमन की खबर सुनकर सारे वानर उनके दर्शन के लिए उमड़ पड़े सीता की पालकी आकर द्वार से लगी तो चारों और वानरों ने उन्हें घेर लिया सीता पालकी से निकलकर राम के पास जाने लगी। चारों ओर खड़े वानर सीता के दर्शन पाकर कृतकृत्य हो रहे थे। राम ने भी सीता के दर्शनों से किसी को नहीं रोका।

सीता हैरान थी कि यह राम का कैसा व्यवहार है। मेरे पास स्वयं न आकर मुझे बुलवाया और यहां मेरा खुलेआम प्रदर्शन करवा रहे हैं। सीता को यह पहेली समझ नहीं आई। सीता ही नहीं बल्कि किसी को भी राम का यह व्यवहार पसंद नहीं आया। सीता धीमे कदमों से राम के पास पहुंची और जोर जोर से रो पड़ी। राम ने आगे बढ़कर सीता को आलिंगन में लिया और गंभीर स्वर में कहा।

सीते मुझे खुशी है कि मैंने जो प्रतिज्ञा की थी उसे पूरा कर सका। अब तुम कैद से मुक्त हो चुकी हो और यह सारा कांड तुम्हारी वजह से हुआ था। आज तुम मेरे सामने खड़ी हो किंतु तुम्हें स्वीकारते मेरा हृदय झिझक रहा है। तुम इतने दिन यहां रही लोग न जाने कैसी कैसी बातें उड़ाएंगे। इस हालत में मैं तुम्हें कैसे स्वीकार करूं।

सीता तो मधुर स्वर सुनने की आस में व्याकुल थी और कहां राम के कटु वचन निकल रहे थे। सीता तेज स्वर में बोली

मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि एक दिन मुझे आपसे ऐसे वचन सुनने पड़ेंगे। ऐसा लांछन सुनकर मेरा दिल टूट चुका है। यह कौन नहीं जानता कि रावण मुझे यहां बल से उठा लाया था फिर आप मुझ पर शंका कर रहे हैं।

लक्ष्मण भी एक तरफ अपना क्रोध पाल खड़े थे। उन्हें भी स्वयं राम से ऐसे ही व्यवहार की उम्मीद न थी। सीता ने कहा

लक्ष्मण सुनो अब मैं एक पल भी जिंदा नहीं रहना चाहती मेरे लिए अग्नि प्रज्ज्वलित करो मैं अभी आग में प्रवेश करूंगी।

लक्ष्मण के सामने अग्नि प्रज्ज्वलित करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। लक्ष्मण ने सोचा अच्छा है ऐसा लांछन जीवन बिताने से उचित तो यही है कि सीता माता अग्नि में ही प्रविष्ट हो जाएं। अग्नि की ज्वाला आकाश को छूने लगी। सीता हाथ जोड़ पति के चारों ओर एक बार घूमी और फिर बिना किसी की और देखे बोली।

सभी देवताओं को मेरा नमन। हे अग्नि आज मेरी पवित्रता पर संदेह किया जा रहा है अगर तुम्हें भी संदेह हो तो मुझे स्वीकार करो।

यह कहते ही सीता जलती हुई आग में प्रविष्ट हो गई। तभी सारे देवता वहां उतर आए और अचानक प्रज्ज्वलित अग्नि से अग्नि देव प्रकट हुए उनके साथ साथ साथ सीता थी। वैसी ही जैसी अग्नि में प्रविष्ट हुई थी। अग्निदेव ने राम को सीता सौंपते हुए कहा-

हे राम सीता पवित्र है इन पर संदेह मत करो।

इतना सुनते ही राम के चेहरे पर हर्ष छा गया। सच तो यह था कि वह आम जनता को सीता की वास्तविकता से परिचित कराना चाहते थे। उन्होंने आगे बढ़कर सीता को आलिंगन में ले लिया और बोले।

प्रिय, तुम पर मुझे कभी संदेह नहीं रहा, बस लोगों द्वारा इस तरह की बातें होने के डर से मैंने तुम्हारी परीक्षा ली थी ताकि भविष्य में कभी किसी को तुम पर शक न हो। क्या

मैं नहीं जानता कि तुम कितनी पवित्र हो। यह मैंने तुम्हारे लिए ही किया है सीते। मेरे वचनों से तुम्हें जो कष्ट हुआ उसका मुझे दुख है। सीता धन्य हुई। उसका सुहाग उसे वापस मिल गया था।

राम का वनवास समाप्त होने को था। राम को भरत की बड़ी चिंता थी न जाने भरत अयोध्या में कैसा समय व्यतीत कर रहे होंगे। लंका में उनका काम समाप्त हो गया था और एक दिन उन्होंने विभीषण से लंका से विदा होने की अनुमति चाही। विभीषण ने उन्हें पुष्पक विमान सौंप दिया। राम, सीता, लक्ष्मण के अलावा समस्त वानर पुष्पक विमान पर सवार हुए और अयोध्या की ओर उड़ान भरी।

हनुमान को पहले ही अयोध्या भेज दिया ताकि वे भरत को उनके आगमन की सूचना दे दें। इस प्रकार सीता एवं राम का मिलाप होने के पश्चात उनका वनवास भी समाप्त हो चुका था और वे अयोध्या पहुंच रहे थे।

अंत

अयोध्या में भरत बड़ी व्याकुलता से राम की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनका एक-एक दिन राम के आने की बाट में व्यतीत हो जाता था। चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण होने में एक दिन शेष रह गया था। भरत यथाशीघ्र राज्य की जिम्मेदारी राम को सौंप कर बरी होना चाहते थे।

राम का आगमन हुआ। पुष्पक विमान नीचे उतरा, पूरा अयोध्या राम के जयघोष से गूंज उठा। एक दिन शुभ मुहूर्त निकाला और राम को सिंहासन पर आसीन किया गया। राम ने राज्य संभालते ही शासन की ओर विशेष ध्यान दिया। उनके राज्य में बकरी और सिंह एक घाट पर पानी पीते थे। सभी निवासी एक दूसरे से मिल जुल कर रहते थे, आपस में लड़ाई झगड़ा कोई नहीं करता था, दुराचार का तो नाम ही नहीं था, सभी पाप कर्मों की भावना से परे थे, सभी संपन्न थे।

एक दिन की बात है राम को पता चला कि सीता के संबंध में समाज में अभी भी ऐसी धारणा है कि सीता लंका में रहने के दौरान पवित्र नहीं रही होगी। राम को सीता की पवित्रता पर पूरा विश्वास था क्योंकि सीता ने विशाल जनसमूह के समक्ष स्वयं अग्नि परीक्षा देकर अपनी पवित्रता का परिचय दिया था। पर लोगों द्वारा यह बात नए सिरे से उठ गई। राम इस बात से बड़े परेशान हो गए। आखिर राजा थे कैसे इस आरोप को अनसुना कर दे। तब उन्होंने लक्ष्मण को बुलाकर सीता को त्यागने की बात कही। लक्ष्मण को इस बात पर बहुत क्रोध आया परंतु वे एक राजा की व्यथा को समझते थे। सीता ने भी हमेशा पति की आज्ञा मानना ही सीखा था वह चुपचाप राम के

निर्देशानुसार अनुसार महल से निकलकर वन की ओर चली गई। तब सीता गर्भवती थी। लक्ष्मण रथ में बिठाकर सीता को दूर वन में छोड़ आए।

वन में महर्षि वाल्मीकि ने सीता को आश्रय दिया। सीता का शेष समय महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में ही गुजरा। सीता ने भी दुख से आह नहीं भरी, महर्षि वाल्मीकि से उन्हें पिता तुल्य प्रेम मिलता था और एक दिन सीता ने दो पुत्रों को जन्म दिया। महर्षि वाल्मीकि ने उनका नाम लव और कुश रखा।

अयोध्या में अश्वमेध यज्ञ की धूम थी। एक दिन महर्षि वाल्मीकि को भी यज्ञ में आने का निमंत्रण मिला था। महर्षि वाल्मीकि यज्ञ में सम्मिलित होने अयोध्या आए उनके साथ लव कुश को भी ले आए। महर्षि वाल्मीकि ने दोनों बालकों को रामायण कंठस्थ करा दी थी। महर्षि के आदेशानुसार वीणा बजाते हुए लव कुश मधुर स्वर में रामायण का पाठ करते जा रहे थे। राम को इन अद्भुत बालों की सूचना मिली तो तत्काल दरबार में बुलाया। लव कुश ने राम दरबार में पहुंचकर राम का अभिवादन किया और सुरीले स्वर में रामायण सुनाने लगे। राम सहित सारा दरबार उनके स्वर से अभिभूत हो उठा। रामायण पाठ की समाप्ति पर राम गदगद हो गए। राम के पूछने पर लव और कुश ने अपना परिचय महर्षि वाल्मीकि के शिष्य के रूप में कराया और बताया कि उन्होंने ही रामायण सिखाई है। इतना सुनते ही राम को यकीन हो गया कि लव कुश उन्हीं के पुत्र हैं। उनकी आंखें नम हो गई।

राम ने महर्षि वाल्मीकि से कहा अगर सीता निष्पाप है तो यज्ञ मंडप पर आकर प्रमाण प्रस्तुत करें जिससे सभी अयोध्या निवासियों और लोगों में यह बात पहुंचे की सीता पतिव्रता थी। दूसरे दिन प्रात काल यज्ञ मंडप में सारा नगर उमड़ आया ।बड़े-बड़े ऋषि तपस्वी भी पधारे। सभी सीता के दर्शन करना चाहते थे। थोड़ी देर में सिर झुकाए सीता

महर्षि वाल्मीकि के साथ यज्ञ मंडप में पहुंची। यह सीता पहले वाली सीता तो न थी किंतु मुख मंडल पर सच्चरित्र तक वैसा ही था। सीता ने यज्ञ मंडप में पहुंचकर धरती माता से हाथ जोड़कर निवेदन किया।

हे वसुंधरा, सारे विश्व को तुम्हीं ने धारण किया है। आज मेरी लाज तुम्हारे हाथ है अगर मैंने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष का स्मरण मात्र भी किया हो तो मुझे अपनी गोद में स्थान न दें।

इतना कहना था कि धरती फट गई एक दरार सी बन गई और अंदर से एक सिंहासन निकला जो हीरे मोती और रत्नों से जड़ा था। सीता उस पर बैठ गई और अगले ही क्षण सिंहासन सीता को लिए धरती के गर्भ में समा गया। राम को होश न रहा, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न की आंखों से आंसुओं की धारा बह उठी। लव कुश माता को जमीन में प्रविष्ट होते देख कर आगे दौड़ पड़े लेकिन तब तक सीता धरती में समा चुकी थी।

वक्त गुजरा राम को राज्य संभालते हुए सैकड़ों वर्ष व्यतीत हो गए और एक दिन यमराज मुनि के भेष में राम से मिलने पहुंचे और बोले।

प्रभु मैं यमराज हूं ब्रह्मा जी ने कहला भेजा है कि आपने जिस हेतु अवतार लिया था वह पूर्ण हुआ अब मानव देह त्याग कर बैकुंठधाम पहुंचे।

राम बोले हे महाराज, मेरा हेतु समाप्त हुआ मुझे तो आपकी ही प्रतीक्षा थी आप जाइए मैं प्रस्तुत हो रहा हूं। राम ने एक दिन मंत्रियों को एकत्र किया और कहा कि मुझे बैकुंठधाम जाना है। सारे नगर में खबर फैल गई कि राम ने महाप्रयाण का निश्चय कर लिया है। फिर क्या था सारे अयोध्यावासी जैसे हाल में थे उसी हाल में दौड़ते हुए महल जा पहुंचे। लोगों का अपने पति यह प्यार देखकर राम कृतार्थ हुए और बोले

अंतिम समय में तुम लोग मुझसे क्या चाहते हो, मैं तुम लोगों की मनोकामना पूर्ण करूंगा।

अयोध्यावासी बोले प्रभु हमारी तो अब एक यही मनोकामना है कि हमें भी आप अपने साथ ले चलें।

राम ने कहा, तथास्तु।

और उनकी बात स्वीकार कर ली। राम ने लव कुश को दरबार में बुलाया। कुश को कोशल का राज्य सौंपा और लव को उत्तर कोशल का और सभी सरयू नदी के तट पर पहुंचे। लक्ष्मण भी वही उनकी प्रतीक्षा में थे। किष्किंधा पुरी से सुग्रीव भी परिवार सहित आ पहुंचे थे। राम सहित सभी सरयू नदी में उतर गए। मंत्रोच्चारण के साथ सभी ने स्नान किया तभी आकाश से देवताओं के भेजे विमान आ गए। उन पर बैठकर राम सहित सभी लोग बैकुंठधाम को रवाना हो गए। चारों और मंद मंद समीर बह रहा था पुष्प वृष्टि हो रही थी विशाल विमान धीरे-धीरे आकाश में विलीन होता जा रहा था।